Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

# अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

**अविनीत**

उणने छोटा नें छांदे चलावण तणी,
ते पिण अकल नहीं घट मांय।
बड़ा रे पिण छांदे चाल सकें नहीं,
तिण अविनीत रा दुःख मांहे दिन जाय।।

**- आचार्य श्री भिक्षु**

नई दिल्ली • वर्ष 26 • अंक 02 • 14 अक्टूबर-20 अक्टूबर, 2024 • प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 12-10-2024 • पेज 16 • ₹ 10 रुपये

अहिंसा, सत्य और संयम से जीवन में होता है मंगल : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 16

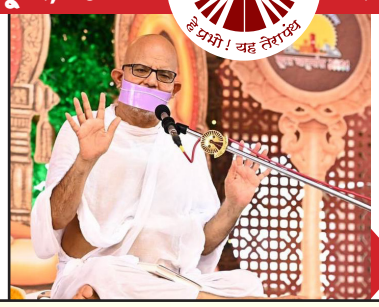

कार्य, व्यवहार, भाषा और विचार में रहे अहिंसा का प्रभाव : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 15

Address Here

# भोजन का विचारों और स्वास्थ्य पर पड़ता है गहरा प्रभाव : आचार्यश्री महाश्रमण

**सूरत।**
**05 अक्टूबर, 2024**

नवान्हिक आध्यात्मिक अनुष्ठान से शक्ति संचार कर ज्योति पुंज आचार्य श्री महाश्रमण जी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि शरीर को बनाए रखने के लिए हवा, पानी और भोजन की आवश्यकता होती है। ये जीवन की प्राथमिक आवश्यकताएँ हैं। इनमें से भी पहला स्थान हवा का, दूसरा स्थान पानी का और तीसरा स्थान भोजन का है।

आहार के बिना तो आदमी कई महीनों तक जीवित रह सकता है, लेकिन हवा के बिना जीवन कठिन हो जाता है। ये तीनों जीवन की प्रथम कोटि की आवश्यकताएँ हैं। दूसरी कोटि की आवश्यकताएँ कपड़ा और मकान हैं। तीसरी कोटि की आवश्यकताएँ शिक्षा और चिकित्सा हैं। इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए व्यक्ति चिंतित हो सकता है, लेकिन इनमें भी समता बनाए रखनी चाहिए।

जो वीर होते हैं, वे समता में रहते हुए बासी भोजन से भी जीवन चला लेते हैं। यह एक विशेष तपस्या की बात हो सकती है। मनुष्य को सात्विक भोजन

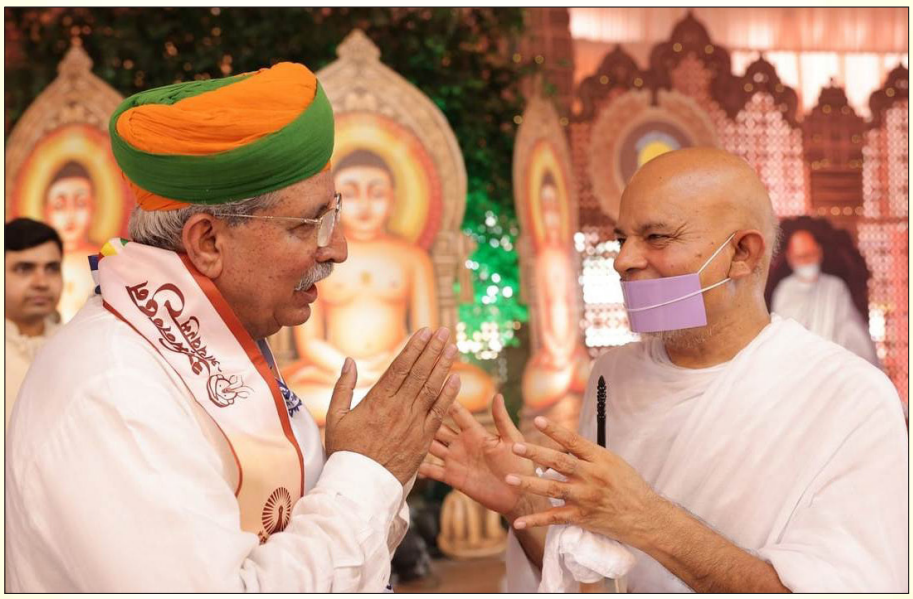

करना चाहिए। कई बार व्यक्ति ऐसी चीजें खा लेता है, जो शरीर के लिए हानिकारक हो सकती हैं। पानी जीवन है, पर शराब जैसी चीजें पीना क्या आवश्यक है? नशीले पदार्थों का सेवन भी व्यक्ति कर लेता है, लेकिन यह सोचना चाहिए कि यह हितकर है या अहितकर ?

हमारा भोजन शाकाहारी होना चाहिए। जैन परंपरा में सामिष भोजन का निषेध है। केवल शाकाहार से जीवन चल सकता है, लेकिन केवल मांसाहार से नहीं। भोजन का हमारे विचारों और स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव पड़ता है। जैन साधुओं में ऐसी दवाओं का भी निषेध है, जिनमें मांसाहार होता है। जीवन में नशामुक्ति भी होनी चाहिए। अणुव्रत में नशामुक्ति की बात कही गई है।

अर्जुन मेघवाल भी अणुव्रत से जुड़े हुए हैं और जैन विश्व भारती इंस्टीट्यूट के चांसलर भी हैं। अर्जुन मेघवाल प्राकृत भाषा के महत्व को भी समझते हैं, जो जैन शास्त्रों की विशेष भाषा है। भारत सरकार ने भी प्राकृत भाषा को क्लासिकल भाषा के रूप में स्वीकार किया है। प्राकृत और संस्कृत ग्रंथों में गूढ़ बातें हैं, जो विज्ञान के लिए भी उपयोगी हैं। देवता भी मनुष्यों से संवाद कर सकते हैं, जबकि मोबाइल तो अब आया है।

टेलीपैथी की बात करें तो हमारे मनःपर्यवज्ञानी व्यक्ति दूसरों के मन की बातें जान लेते हैं। जीव मरकर कहाँ जाता है, यह बातें हमारे आगमों में उल्लिखित हैं। इन प्राचीन ग्रंथों में दर्शन और ज्ञान की बातें निहित हैं, जिन्हें सरकार ने स्वीकार किया है। यह एक अच्छी बात है। भारत में अनेक ग्रंथ, पंथ और संत हैं, जिनसे जनता को लाभ मिलना चाहिए। राजनीति भी सेवा का एक माध्यम है। अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का पंचम दिवस 'नशामुक्ति दिवस' के रूप में मनाया गया। (शेष पेज 14 पर)

# सम्यक् ज्ञान के साथ सम्यक् आचरण भी है आवश्यक : आचार्यश्री महाश्रमण

**सूरत।**
**07 अक्टूबर, 2024**

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का अंतिम और सातवां दिवस ₹जीवन विज्ञान दिवस₹ के रूप में मनाया गया। आज के कार्यक्रम में मूर्तिपूजक संप्रदाय से मुनि भव्यकीर्ति सागरसूरी जी सहित अन्य संतों का भी आगमन हुआ। अध्यात्म शक्ति के पुरोधा आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आध्यात्मिक अनुष्ठान संपन्न करवाया। इसके साथ ही अष्ट दिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर का समापन भी हुआ।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी ने ₹आयारो आगम₹ की वाणी का रसास्वादन कराते हुए कहा कि जिस व्यक्ति में कोई कमी होती है, जो नीच स्तर का होता है, हल्का होता है, वह तुच्छ होता है। जिसके पास धन नहीं होता, वह गृहस्थ धन की दृष्टि से तुच्छ हो सकता है। जिस साधु में साधना की कमी होती है, वह साधु भी साधना की दृष्टि से तुच्छ हो सकता है। जो तीर्थंकरों की आज्ञा का पालन नहीं करता और संयमित जीवन नहीं जीता, वह साधु भी तुच्छता की श्रेणी में आ जाता है।

ज्ञानी होना एक बात है, और साधक होना दूसरी बात, पर ज्ञानी और साधक होना विशेष बात है। जो तुच्छ और आचारहीन होता है, वह अपनी बात कहने में भी ग्लानि का अनुभव करता है। जीवन में सम्यक् ज्ञान और सम्यक् आचरण दोनों का होना आवश्यक है।

सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान, सम्यक् चारित्र और सम्यक् तप को मोक्ष का मार्ग बताया गया है। (शेष पेज 14 पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
14 अक्टूबर-20 अक्टूबर, 2024

# संयम की साधना है सच्चा धन : आचार्य श्री महाश्रमण

सूरत।
06 अक्टूबर, 2024

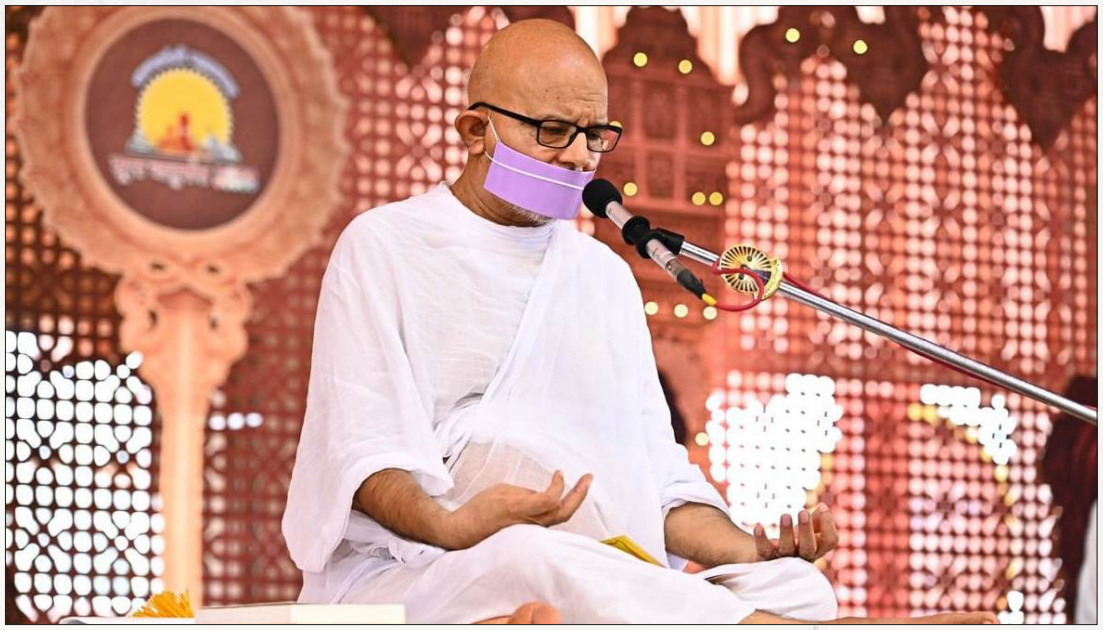

परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी ने पावन प्रेरणा देते हुए फरमाया कि आयारो आगम के दूसरे अध्ययन में उल्लेखित है कि इस संसार में धनी और गरीब दोनों प्रकार के लोग मिलते हैं। कहीं ऊंची-ऊंची अट्टालिकाएं होती हैं, जिनमें समृद्ध लोग रहते हैं, तो कहीं झुग्गी-झोपड़ियों में, और कभी-कभी फुटपाथ पर भी लोग रहते हैं।

धन और दरिद्रता जीवन की भिन्न अवस्थाएं हैं। शास्त्रकारों ने धर्म के संदर्भ में यह बात भी बताई है कि कौन व्यक्ति दरिद्र है। साधु को 'तपोधन' कहा गया है, यानी उसकी तपस्या ही उसका धन है। ₹अभिधान चिंतामणि₹ कोष, जो संस्कृत शब्दों का पर्यायवाची ग्रंथ है, में कई संस्कृत शब्दों के पर्यायवाची शब्द दिए गए हैं। अगर यह नाममाला स्पष्ट रूप से याद हो जाए और साथ में व्याकरण भी आत्मसात हो जाए, तो संस्कृत पर अधिकार प्राप्त हो सकता है।

साधु का तप और योग उसकी संपत्ति है। जो साधु आज्ञा का पालन नहीं करता, वह दरिद्र साधु कहलाता है। तीर्थंकर की आज्ञा में चलना संयम की साधना है। तीर्थंकर की आज्ञा के बिना कोई कार्य नहीं करना चाहिए। संयम में अरति न रखें और असंयम में रति न रखें। शब्द, स्पर्श, और कष्टों को सहन करें, पौद्गलिक विषयों में राग न करें। कर्म शरीर को धुनें और उससे निर्जरा करें। कठोर और नियंत्रित आहार का सेवन करें। अतीत के कर्मों के कारण मोह का उदय होता है, जिससे व्यक्ति तीर्थंकर की आज्ञा का उल्लंघन कर बैठता है। आज्ञा धर्म है और अनाज्ञा अधर्म। धर्म संघ में आचार्य के अनुशासन-आज्ञा का पालन अनिवार्य है। पारिवारिक संबंधों में भी अनुशासन और आज्ञा का पालन आवश्यक होता है।

प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन हो रहा है, प्रेक्षाध्यान की साधना को भी एक प्रकार की संपत्ति के रूप में देखा जा सकता है। गृहस्थों द्वारा लिए गए बारह व्रत यदि ठीक से पालन किए जाएं, तो यह भी एक प्रकार का धन है। तपस्या भी एक संपत्ति है, जो आत्मा के काम आती है। भौतिक संपत्ति केवल इस लोक तक ही सीमित है, जबकि धर्म सच्चा धन है। संयम की साधना हमारा सच्चा धन है, इसे संकल्प रूपी ताले से सुरक्षित रखना चाहिए।

साध्वी प्रमुखाश्री जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि अणुव्रत के छोटे-छोटे नियम लालटेन की तरह होते हैं, जो व्यक्ति के मार्ग को प्रकाशित करते हैं। अनुशासन ही अणुव्रत का मूल है। आत्मा के द्वारा आत्मा का अनुशासन आत्मानुशासन कहलाता है। अनुशासन दो प्रकार का होता है- विधि और निषेध।

साध्वीवर्याजी ने सम्यकत्व के पांच लक्षणों में से चतुर्थ लक्षण ₹अनुकंपा₹ का महत्व बताया। अनुकंपा से ही धर्म का विकास होता है। सामाजिक जीवन में भी अनुकंपा का महत्व है, यह लौकिक और लौकोत्तर दो प्रकार की होती है। लौकोत्तर अनुकंपा से आत्मा का कल्याण संभव है।

मुख्य प्रवचन से पूर्व आचार्य प्रवर ने उपस्थित जनमेदिनी को आध्यात्मिक अनुष्ठान के अंतर्गत मंत्र जप का प्रयोग कराया। पूज्य सन्निधि में अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का छठा दिन ₹अनुशासन दिवस₹ के रूप में मनाया गया।

पूज्यप्रवर ने फरमाया कि अणुव्रत की परिभाषा है - ₹स्वयं पर स्वयं का अनुशासन₹। मनुष्य को स्वयं को अनुशासन में रखना चाहिए, फिर दूसरों पर भी अनुशासन की बात हो सकती है। संयम और तप से आत्मा का अनुशासन संभव है। मन, वाणी, शरीर, और इंद्रियों पर नियंत्रण आत्मानुशासन है।

पूज्यवर की सन्निधि में सूरत पुलिस के होमगार्ड्स पहुंचे। होमगार्ड अधिकारी सी.बी. बोहरा ने अपनी भावना व्यक्त करते हुए अनुशासन को शासन के नियमों का पालन बताया। संजय बोथरा ने कार्यक्रम की जानकारी दी। पूज्यवर ने होमगार्ड्स को सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति की संकल्पत्रयी ग्रहण करवाई।

आचार्य प्रवर के दर्शनार्थ सौराष्ट्र से संघबद्ध लोगों का आगमन हुआ। आचार्य प्रवर ने अनुकम्पा बरसाते हुए राजकोट में वर्धमान महोत्सव करने की घोषणा की। बेंगलुरु से समागत माणकचंद संचेती ने अपने विचार व्यक्त किए। बेंगलुरु ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने अपनी प्रस्तुति दी तथा ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं ने गीत का संगान किया।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

# शक्ति से करें स्व-पर कल्याण : आचार्यश्री महाश्रमण

सूरत।
03 अक्टूबर, 2024

आश्विन नवरात्र के प्रथम दिवस तीर्थंकर प्रतिनिधि शक्तिस्रोत आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आर्ष वाणी के उच्चारण के साथ आध्यात्मिक अनुष्ठान करवाया। मंगला देशना देते हुए, महाशक्ति के पुरोधा ने कहा- आयारो आगम में कहा गया है कि जीवन में कभी-कभी दुखद समय आते हैं। प्रिय का वियोग, अपमान, बदनामी या शारीरिक तकलीफ से मन दुखी हो सकता है। साथ ही उत्सव या अनुकूल परिस्थितियाँ जैसे खुशी के पल भी आते हैं।

जीवन में सुख-दुःख आते रहते हैं। साधु को विशेष रूप से समता की साधना करनी चाहिए। आज से नवरात्रि का अनुष्ठान शुरू हुआ है। इस समय, दिन-रात की लंबाई लगभग बराबर होती है। हमारे यहां गुरुदेव तुलसी की विद्यमानता में, सन् 1994 में दिल्ली में अनुष्ठान का यह क्रम शुरू हुआ था जो आज भी जारी है। जीवन में शक्ति का बहुत महत्व है। शक्ति से हम अपना और दूसरों का कल्याण कर सकते हैं।

आत्मा में अनंत शक्ति होती है। शक्ति का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए। सज्जन व्यक्ति का बल दूसरों का कल्याण करता है। अहंकार नहीं करना चाहिए। नवरात्र के समय में आदमी को शक्ति की आराधना करने का प्रयास किया जाना चाहिए। शक्ति और शांति दोनों को जीवन में साथ लेकर चलना चाहिए।

साध्वीवर्या संबुद्धयशाजी ने उवसग्गहर स्तोत्र का विवेचन करते हुए कहा कि सम्यकत्व रूपी रत्न प्राप्त करने वाला अजरामर हो जाता है।

पूज्यवर ने उपस्थित जनता को प्रेक्षाध्यान का प्रयोग करवाया। अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के तीसरे दिन, वीर नर्मद दक्षिण गुजरात युनिवर्सिटी के वाईस चांसलर किशोर सिंह चावड़ा ने अपनी भावना व्यक्त की।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अणुव्रत प्रेरणा दिवस के अवसर पर पावन पाथेय प्रदान करते हुए कहा कि परम पूज्य आचार्यश्री तुलसी ने अणुव्रत का कार्य आगे बढ़ाया था। अणुव्रत का मंतव्य है कि आदमी अपनी-अपनी धर्म-परंपरा में रहते हुए भी अणुव्रत के नियमों का पालन कर गुड मैन बनने का प्रयास कर सकता है।

पूजा जैन (टोहाना) ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

# निष्पत्ति पूर्ण रहा सीपीएस ट्रेनर्स कॉनक्लेव 'क्षितिज'

## ■ 11 राष्ट्रीय और 24 ज़ोनल प्रशिक्षक बनें प्रमाणीकृत प्रशिक्षक ■ 40 से अधिक प्रशिक्षक बनें बारह व्रती

**सूरत।**

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद सूरत द्वारा सीपीएस ट्रेनर्स कॉनक्लेव 'क्षितिज-Beyond Limits' का आयोजन किया गया।

नमस्कार महामंत्र के समुच्चारण के पश्चात राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा ने दो दिवसीय इस कार्यक्रम के उद्घाटन की घोषणा करते हुए सभी को क्षितिज तक उड़ान भरने की प्रेरणा दी।




परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी ने सभी को आशीर्वाद देते हुए फरमाया कि वक्तृत्व कला का बाह्य भाग है हाव-भाव, वाक्-शैली आदि, परंतु आंतरिक भाग है ज्ञान, सभी प्रशिक्षक अपने ज्ञान को निरंतर बढ़ाते रहें। राष्ट्रीय अध्यक्ष ने सीपीएस कार्यशालाओं और अन्य प्रशिक्षणों की जानकारी निवेदित की।

राष्ट्रीय प्रभारी दिनेश मरोठी ने दो दिवसीय कॉनक्लेव की विषय की रूपरेखा देते हुए बताया कि इस कॉनक्लेव में उपस्थित 56 प्रशिक्षकों में से 40 से अधिक प्रशिक्षक बारह व्रती बने हैं। मुख्य प्रशिक्षक अरविन्द मांडोत ने कहा कि सीपीएस प्रशिक्षक धर्मसंघ के अतिरिक्त अनेक सरकारी, व्यावसायिक और शैक्षणिक संस्थानों में निरंतर प्रशिक्षण देकर धर्म संघ की प्रभावना कर रहे हैं।

उन्होंने राष्ट्रीय प्रशिक्षक के रूप में उत्तीर्ण हुए अखिल मारू, अनिला सेठिया, अरविंद पोखरना, चिराग पामेचा, दिनेश मरोठी, महावीर भटेवरा, भव्य बोथरा, प्रीति धाकड़, मनीषा सेठिया, विवेक संकलेचा और विनीत सिंघवी के नामों की घोषणा की। आचार्य प्रवर के समक्ष इन राष्ट्रीय प्रशिक्षकों को प्रमाण पत्र भेंट किए गए और 24 ज़ोनल ट्रेनर्स के नामों की घोषणा की गई।

अभातेयुप के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि योगेश कुमार जी ने कहा कि प्रशिक्षक स्वयं को केवल सीपीएस तक ही सीमित नहीं करें अपितु तेरापंथ धर्मसंघ की प्रभावना के लिए उपासक, प्रवक्ता और विविध विषयों पर निरंतर प्रशिक्षण में लगे रहें । मुनिश्री ने सभी प्रशिक्षकों को निरंतर आगे बढ़ने की प्रेरणा दी।

कॉनक्लेव में मुनि जागृत कुमार जी ने प्रेरणा देते हुए कहा कि इच्छाएं अपरिमित हैं परंतु जरूरतें सीमित हैं। हमें इच्छाओं को नहीं आवश्यकताओं को ध्यान में रख कर कार्य करना चाहिए।

प्रशिक्षण सत्र के प्रारंभ में सूरत परिषद् अध्यक्ष अभिनंदन गादिया ने सभी का स्वागत करते हुए शुभकामनाएँ दी। इस सत्र में उपाध्यक्ष जयेश मेहता, महामंत्री अमित नाहटा, सहमंत्री लक्की कोठारी, संगठन मंत्री अमित सेठिया, मुख्य प्रशिक्षक अरविन्द मांडोत, सीपीएस प्रभारी दिनेश मरोठी, सहप्रभारी सोनू डागा, सलाहकार सतीश पोरवाड़, परिषद् मंत्री सौरभ पटावरी ने सीपीएस और कॉनक्लेव के बारे में भावाभिव्यक्ति दी। इस कॉनक्लेव की मुख्य थीम 'जैनिज़्म इन साइंटिफिक' के आधार पर देशभर से समागत 12 राष्ट्रीय प्रशिक्षकों ने 12 व्रतों को विज्ञान और जीवन से जोड़ते हुए अपनी प्रस्तुति दी और विभिन्न जिज्ञासाओं का समाधान किया। प्रथम दिन मध्यरात्रि को 2:30 बजे तक सत्र चला और द्वितीय दिवस प्रातः 8 बजे से शाम 5:30 बजे तक कार्यक्रम गतिमान रहा।

कॉनक्लेव के द्वितीय दिवस प्रशिक्षण सत्र के पश्चात मुनि योगेश कुमार जी के सान्निध्य में ₹सीपीएस वर्तमान और भविष्य₹ पर समूह चर्चा हुई। इस चर्चा के पश्चात प्रशिक्षकों को ट्रेनिंग सम्बन्धी कार्यभार दिया गया। सभी प्रोविजनल ट्रेनर्स को मूल्यांकन प्रणाली के आधार पर सीपीएस राष्ट्रीय और जोनल प्रशिक्षक के प्रमाण पत्र भेंट किए गए।

क्षितिज कॉनक्लेव के सफल आयोजन में स्थानीय संयोजक गणेश बंब, कल्पेश जैन सहित सूरत परिषद् के अनेक सदस्यों का विशेष श्रम नियोजित हुआ।

# पर्यावरण जागरूकता के तहत अणुव्रत वाटिका उद्‌घाटन

**दिल्ली।**

अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी के तत्वावधान एवं अणुव्रत समिति ट्रस्ट दिल्ली द्वारा आचार्य तुलसी सर्वोदय बाल विद्यालय छत्तरपुर में पर्यावरण जागरूकता के तहत अणुव्रत वाटिका का उद्‌घाटन अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी एवं दिल्ली समिति के पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ।

विद्यालय के प्रधानाचार्य मनदीप कुमार ने सभी का स्वागत अभिनन्दन किया तथा समिति के कार्यों की प्रशंसा की। अणुविभा सोसाइटी के प्रबन्ध न्यासी तेजकरण सुराणा ने बच्चों को कहा कि इस वाटिका को अपने श्रम से निखारें, इसकी देखभाल करें, इसमें सहयोगी बनें। अणुविभा के महामंत्री भीखम चन्द सुराना ने अणुव्रत द्वारा चल रहे प्रकल्पों की जानकारी विद्यार्थियों के समक्ष रखी। बाबूलाल दूगड़ ने जीवन विज्ञान को विद्यालय की प्रार्थना सभा में आयोजित करने का सुझाव दिया।

दिल्ली समिति अध्यक्ष मनोज बरमेचा ने अणुव्रत के नियमों को पालने एवं इस वाटिका को सम्भालने के लिए बच्चों को प्रेरित किया तथा सभी का स्वागत अभिनंदन किया। विद्यालय के बच्चों द्वारा अणुव्रत गीत की सुन्दर प्रस्तुति की गई। एसीसी सेण्ट्रल ज़ोन के संयोजक चन्द्रकांत कोठारी द्वारा एसीसी 2024 की विस्तृत जानकारी दी गई।

कल्पना सेठिया द्वारा संकल्प पत्रों की जानकारी दी गई। कार्यक्रम का कुशल संचालन संजय कुमार द्वारा कुशलता पूर्वक किया गया। आभार ज्ञापन दिल्ली समिति मंत्री राजेश बैंगानी द्वारा किया गया।

# चातुर्मास हेतु अर्ज करने सूरत पहुँचा राजराजेश्वरी नगर तेरापंथी समाज

**राजराजेश्वरी नगर।**

**लगभग 70 से अधिक प्रौढ़ व वृद्ध भाई-बहनों सहित 151 लोगों का समूह सूरत पहुंचा**

सूरत में चातुर्मासार्थ विराजित आचार्य श्री महाश्रमण जी के दर्शन-सेवा हेतु राजाराजेश्वरी नगर का तेरापंथ समाज सभा अध्यक्ष राकेश छाजेड़ के नेतृत्व में आयोजित त्रिदिवसीय हवाई यात्रा संघ के रूप में लगभग 70 से अधिक प्रौढ़ व वृद्ध भाई-बहनों सहित 151 लोगों का समूह सूरत पहुंचा।

तेरापंथी सभा के अध्यक्ष राकेश छाजेड़ के नेतृत्व में यात्रा संघ ने परमपूज्य गुरुदेव, मुख्यमुनि महावीर कुमार जी, साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी, साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशाजी एवं अन्य सभी चारित्रात्माओं के दर्शन-सेवा का लाभ प्राप्त किया। अध्यक्ष महोदय ने विगत 2 वर्षों से चारित्रात्माओं के चातुर्मास से रिक्त राजाराजेश्वरी नगर के तेरापंथ समाज की व्यथा से गुरुदेव को अवगत कराया एवं अगले वर्ष चातुर्मास प्रदान करने की भाव-विभोर अर्ज प्रस्तुत की। पूज्य प्रवर ने फरमाया कि आपके क्षेत्र की अर्ज उनकी दृष्टि में है किन्तु चातुर्मास के अतिरिक्त शेषकाल में भी क्षेत्र के श्रावक-श्राविकाओं में जप-तप, स्वाध्याय, शनिवार की सामायिक आदि धर्माराधना के क्रम निरन्तर करते रहने की प्रेरणा प्रदान की। साध्वीप्रमुखाश्री जी ने साप्ताहिक सामायिक, ज्ञानशाला आदि के माध्यम से आध्यात्मिक जागरूकता गतिमान रखने की प्रेरणा प्रदान की। साध्वीवर्याश्री ने समाज में आध्यात्मिक ज्ञान के विकास हेतु यथेष्ट प्रयास करने पर बल दिया। सभी चारित्रात्माओं ने अध्यक्ष राकेश छाजेड़ की वरिष्ठ उम्र वाले श्रावकों को विशेष रूप से दर्शन करवाने की भावना की सराहना की।

पूर्व अध्यक्ष, वर्तमान पदाधिकारी, प्रायोजक परिवार मधु-विमल कटारिया एवं गुलाबदेवी छाजेड़ परिवार एवं समाज के अनेक गणमान्य व्यक्तियों से सुसज्जित इस संघ को तेयुप अध्यक्ष बिकास छाजेड़, तेमम अध्यक्ष सुमन पटावरी एवं उनकी टीम का अपेक्षित सहयोग प्राप्त हुआ।

प्रायोजक परिवारों को स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया गया। यात्रा के मुख्य संयोजक राजेश छाजेड़ एवं सहसंयोजक के रूप में सरोज बैद, अनिल सुराना, मनीष पगारिया, विनोद बोथरा, प्रकाश बैद आदि के समय एवं श्रम नियोजन से सुन्दर व्यवस्था से यह यात्रा सकुशल सानंद संपन्न हुई। मंत्री गुलाब बाँठिया ने आभार प्रकट किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
14 अक्टूबर-20 अक्टूबर, 2024

# याचक भावों से कृत-कृत भावों में भीगी दिल्ली

## 'दिल्ली वाले आए हैं दिल्ली लेकर जाएंगे' के उद्घोष से शुरू हुई यात्रा' दिल्ली वाले आए थे दिल्ली लेकर जा रहे हैं तक का सफरनामा...

**सूरत।**

भारत देश की राजधानी व तेरापंथ ही नहीं वरन् समग्र जैन धर्मावलंबियों के दृष्टिकोण से सघन प्रवास क्षेत्र होने के कारण दिल्ली का महत्व विशिष्टतम् है। इन वर्षों में दिल्ली की विभिन्न स्थानीय सभाओं का प्रायः गुरु दर्शनार्थ संघ ले जाने का कार्यक्रम रहता ही है, इस वर्ष दिल्ली सभा के अध्यक्ष सुखराज सेठिया ने गुरू दर्शनार्थ व चातुर्मासिक अर्ज हेतु दिल्ली सभा के तत्वावधान में वृहद एकल संघ ले जाने का संकल्प किया, एक उद्घोष दिया ₹दिल्ली वाले आए हैं दिल्ली लेकर जाएंगे₹। पहले चिंतन किया गया कि लगभग 400 लोग संघबद्ध जाएंगे, तिथि का भी निर्धारण कर लिया गया। परन्तु नियत कुछ और ही था। दिल्ली में विराजित चारित्रात्माओं की प्रेरणा से अर्ज को और प्रभावी बनाने हेतु निर्णय किया गया कि यह संख्या चार अंकों में हो। इसके लिए तेरापंथ समाज के अलावा अन्य सम्प्रदाय व अध्यात्म प्रेमियों से परिपूर्ण यात्रियों की संख्या में अंकों की बढ़ोत्तरी की जाए।

लक्ष्य रखा गया 1100 से ज्यादा का। युगप्रधान पूज्य गुरूदेव की ऊर्जा व अनुकम्पा से देखते ही देखते संख्या 1300 पार हो गई।

दिल्ली से विशाल संघ दिनांक 27 सितंबर को दिल्ली से रवाना होकर 28 सितंबर को प्रातः सूरत पहुंचा। प्रातः सभी ने गुरुदेव के मुखारविंद से अमृत देशना का श्रवण किया।

दोपहर में साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी ने असीम अनुकंपा करते हुए विशाल संघ को विशेष सेवा का सुअवसर प्रदान किया। अनेक वक्ताओं ने दिल्ली की भावनाओं के ज्वार को शब्दों में समेटने का पूर्ण प्रयास किया। अनुरोध के क्रम में दिल्ली सभाध्यक्ष सुखराज सेठिया ने निवेदित किया कि पूर्व में आचार्यों के चातुर्मासों की अपेक्षा इस बार अंतराल बहुत ज्यादा आ गया है, दिल्ली से जो संदेश विश्व में जाता है उसकी अनुगूंज भी विशेष होती है। शासन माता की समाधि 'वात्सल्य पीठ' भी गुरूकृपा हेतु प्रतीक्षारत है, तथा साध्वीप्रमुखा के रूप में आपके प्रथम पदार्पण का भी दिल्ली की धरा को इंतज़ार भी है एवं स्वागत हेतु लालायित भी है। शासनसेवी कन्हैयालाल जैन पटावरी ने भी सारगर्भित वक्तव्य में पधारने का अनुरोध किया और दिल्ली की सार-संभाल को सामयिक अपेक्षा बताते हुए प्रमुखाश्री को दिल्ली वालों के साथ अर्ज में अपनी भूमिका पुरजोर निभाने का निवेदन किया। सम्पूर्ण समाज की भावनाओं की अभिव्यक्ति समाज भूषण अजातशत्रु मांगीलाल जी सेठिया ने और दिल्ली के पांचों महिला मंडल का प्रतिनिधित्व करते हुए सुनीता जैन ने पुरजोर अनुरोध किया।

दिल्ली के अनेक विशिष्ट गायक भी यात्रा में विशेष रूप से सम्मिलित थे, उन्होंने प्रमुखाश्री जी के समक्ष अर्ज़ के गीत का मधुर संगान किया। मंच संचालन दिल्ली सभा के महामंत्री प्रमोद घोड़ावत ने किया।

पूज्यप्रवर की सेवा के समय गुरुदेव के समक्ष समाज भूषण अजातशत्रु मांगीलाल सेठिया, शासनसेवी कन्हैयालाल जी पटावरी, दिगम्बर जैन समुदाय एवं पंजाब केसरी दैनिक के संपादक स्वदेश भूषण जैन, दिगंबर जैन समाज से शरद कासलीवाल, श्वेताम्बर मूर्तिपूजक सम्प्रदाय से ललित नाहाटा, जीतो की ओर से किशोर कोचर, अणुव्रत समिति अध्यक्ष मनोज बरमेचा, तेयुप दिल्ली अध्यक्ष राकेश बैंगाणी ने दिल्ली की अर्जी प्रस्तुत करते हुए गुरु से मर्जी की महर करवाने का भावुक अनुरोध किया

चारों जैन संप्रदायों की भावनाओं को समाहित करते हुए प्रो. रतन जैन ने निवेदन किया कि आप दिल्ली पधारें, हम सभी मिलकर यह सुनिश्चित करेंगे कि सभी सम्प्रदायों के आचार्य आदि मुख्य जन उस समय में दिल्ली में एकत्रित हों और दिल्ली से पूरे विश्व में जैन एकता का संदेश तो जाए ही अध्यात्म की भी अभूतपूर्व लहर चले जिससे सम्पूर्ण विश्व लाभान्वित हो। संगायकों द्वारा भावों एवं उत्साह से परिपूर्ण गीत का संगान किया गया। युगप्रधान पूज्यश्री ने अर्ज़ की भावनाओं पर सुनवाई करते हुए अपनी घोषित अघोषित बातें बताई। शेयर बाजार से भी अधिक उतार चढ़ाव का माहौल निर्मित हो गया, मानो सभी पुनः तुलसी युग में प्रविष्ट हो गए हों। कभी प्रतीत होता कि अभी दिल्ली का चातुर्मास फरमा देंगे और कभी लगता कि मानो आने वाले कुछ वर्षों तक दिल्ली की प्यास नहीं बुझेगी। अंततः सेवा का समय बिना निष्कर्ष के ही समाप्त हो गया। क्योंकि संभवतः निर्णय की प्रतीक्षित घड़ियां आई ही नहीं थी।

29 सितम्बर 2024 प्रातः महावीर समवसरण के पावन प्रवचन पण्डाल में गुरूवर का पदार्पण हुआ। महातपस्वी गुरुदेव का पवित्र आभावलय चित परिचित स्थायी मुस्कान के साथ उस समय कुछ अलग ही देदीप्यमान प्रतीत हो रहा था। दिल्लीवासी विशाल जनमेदिनी और एक अनुशासित जूलूस के रूप में समवसरण में आए और निर्धारित स्थान ग्रहण किया, लगभग सभी ने सामायिक का लाभ लिया। प्रवचन के उपरांत इंतजार की घड़ियां समाप्त होने वाली थी, यह कोई नहीं जानता था। नित्यप्रति की भांति समयबद्ध अमृत पुरुष की अमृत देशना का पान सभी ने किया। तत्पश्चात् दिल्ली वालों को पुनः अर्ज़ का समय संप्राप्त हुआ।

दिल्ली विधानसभा अध्यक्ष रामनिवास गोयल ने वक्तव्य में सम्पूर्ण दिल्ली वासियों व प्रशासन की ओर से विनती की और पूर्ण सहयोग का विश्वास दिलाया। राज्यसभा सांसद लहर सिंह सिरोहिया ने केन्द्र सरकार का प्रतिनिधित्व करते हुए भावाभिव्यक्ति दी एवं ऐतिहासिक और विरल चातुर्मास के प्रति आशाशिवत किया। पंजाब केसरी दैनिक मुखपत्र की चेयरपर्सन किरण चोपड़ा ने समाज के विभिन्न वर्गों तक महाश्रमण वाणी को पहुंचाने का संकल्प जताया। हल्दीराम उद्योग समूह के मधुसूदन अग्रवाल तथा टी एम लालानी दिल्ली के उद्योगपतियों का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। इनके अलावा भी समाज के अनगिनत गणमान्य व्यक्तियों विभिन्न संस्थाओं के प्रमुख पदाधिकारियों से सुशोभित दिल्ली संघ की छटा ही निराली थी।

वक्ताओं से दिल्ली की अर्ज़ सुनकर पूज्यवर कृपावृष्टि कराने को अर्जी पर मर्जी की मुहर लगाने को अब तैयार थे। अल्प संबोधन के उपरांत जैसे ही घड़ी में 12 बजकर 1 मिनट बजे वैसे ही गुरूदेव ने नवकार मंत्र का उच्चारण आरंभ किया, दिल्ली वासी आश्चर्य मिश्रित आह्लाद से सराबोर हो गए, पंडाल में शांति व्याप्त हो गई, सभी की धड़कनें थम सी गई। समवसरण में बैठे बहुतायत लोगों के जीवन में एक अद्वितीय क्षण घटित हो गया था, संभवतः अधिकांश लोगों को जीवन में प्रथम बार साक्षात अवसर मिला था। कृपा निधान ने करूणा रस बरसाते हुए अविलम्ब बिना भूमिका के ही समय काल भाव की अनुकूलता से 2027 का चातुर्मास दिल्ली को प्रदान कर दिया। दिल्ली सभाध्यक्ष व कन्हैयालाल पटावरी सरीखे प्रखर वक्ताओं को भी भावनाओं को शब्द देने की आवश्यकता नहीं पड़ी। दिल्ली वालों के दिलों में उल्लास का सागर उमड़ पड़ा, सीमाएं पार कर बाहर आने लगा। अत्यंत देखने योग्य दृश्य बन गया था सभी उत्साहित होकर एक-दूसरे को बधाईयां दे भी रहे थे और स्वीकार भी कर रहे थे कुछ तो मानो भावनाओं के अतिरेक में नृत्य करने लगे तो कईयों के नेत्र अश्रुपूरित हो गए । सम्पूर्ण दिल्ली वासी झूम उठे। दिल्लीवासी झांकियों - गीत आदि से भी अपनी अर्ज़ रखते उस से पूर्व ही गुरुवर ने उन पर कृपावृष्टि कर दी। कृतज्ञ अध्यक्ष एवं मंच संचालक महामंत्री अपने भाग्य सराह रहे थे। संगायक कृतज्ञता ज्ञापन के गीत गा रहे थे। करूणानिधि ने मंगलपाठ प्रदान करवाया। सभी श्रद्धालु तय कार्यक्रम के अनुरूप झोली भरकर सायंकाल दिल्ली वापसी को तैयार थे। एक सुखद सुफल यात्रा सुसम्पन्नता की ओर अग्रसर हो गई। यात्रा के संयोजकीय दायित्व का निर्वहन सभा के मंत्री अशोक संचेती एवं भवन व्यवस्थापक संदीप डूंगरवाल ने किया। सूरत चातुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति का अविस्मरणीय सहयोग, उदारमना जीतमल चोरड़िया, दिल्ली की समस्त स्थानीय सभा, तेरापंथ युवक परिषद् , महिला मंडल आदि संस्थाओं का सराहनीय समर्पण एवं उल्लेखनीय योगदान सूरत यात्रा में दिल्ली सभा को प्राप्त हुआ।

इस प्रकार जो 'दिल्ली वाले आए हैं, दिल्ली लेकर जाएंगे' का नारा लेकर सूरत पहुंचे थे वो 'दिल्ली वाले आए थे, दिल्ली लेकर जा रहे हैं' का गीत अधरों पर गुनगुनाते हुए कृत कृत भावों से पुनः एक बार फिर ऐतिहासिक चातुर्मास का संकल्प हृदयंगम करते हुए दिल्ली की ओर प्रस्थान कर गए।

## संक्षिप्त खबर

# एटीडीसी में वाइड्स क्यूब मशीन का उद्घाटन

**गुवाहाटी।** तेरापंथ युवक परिषद् गुवाहाटी ट्रस्ट द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर में वाइड्स क्यूब मशीन का उद्घाटन जैन संस्कारक जयंत सुराणा एवं तेयुप अध्यक्ष सतीश कुमार भादानी के मंगल मंत्रोच्चार से जैन संस्कार विधि से हुआ। आचार्य तुलसी महाश्रमण रिसर्च फाउंडेशन के अध्यक्ष विजयराज डोसी, पूर्व अध्यक्ष विजयसिंह डागा एवं श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, गुवाहाटी के अध्यक्ष बाबूलाल सुराणा ने वाइड्स क्यूब (थायराइड, विटामिन-डी आदि जांच) मशीन का शुभारंभ किया। ज्ञातव्य है कि यह अत्याधुनिक मशीन एटीएमआरएफ द्वारा प्रदान की गई है। इस मौके पर एडीटीसी के संयोजक झनकार दुधोड़िया, एटीएमआरएफ के मंत्री अजय भंसाली, तेयुप के पूर्व अध्यक्ष मनीष कुमार सिंघी आदि ने अपनी भावनाएं व्यक्त की। धन्यवाद ज्ञापन तेयुप मंत्री पंकज सेठिया ने किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में तेयुप के पूर्व अध्यक्षों सहित संपूर्ण टीम का सक्रिय सहयोग रहा।

# मेगा ब्लड डोनेशन कैंप का आयोजन

**उदयपुर।** अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद उदयपुर द्वाराआयोजित मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव कैंप का आयोजन महाप्रज्ञ विहार भुवाणा में भारतीय जनता युवा मोर्चा के विशेष सहकार के साथ शुरू हुआ जिसमें 101 युवाओं ने रक्तदान किया। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के स्थापना दिवस, तेरापंथ युवक परिषद उदयपुर के 51वें स्वर्ण जयंती वर्ष, देश के प्रधानमंत्री के जन्म दिवस के विशेष उपलक्ष पर आयोजित इस शिविर का उद्घाटन मुख्य अतिथि पंजाब एवं चंडीगढ़ के महामहिम राज्यपाल गुलाबचंद कटारिया द्वारा किया गया। राज्यपाल ने 'शासनश्री' मुनि सुरेशकुमारजी 'हरनावां' के दर्शन भी किए। तेयुप अध्यक्ष भूपेश खमेसरा ने स्वागत उद्बोधन दिया। कार्यक्रम में शहर विधायक ताराचंद जैन, विधायक फूल सिंह मीणा, भाजपा सहकारिता प्रकोष्ठ के प्रमोद सामर, उप महापौर पारस सिंघवी, तेरापंथ सभा अध्यक्ष कमल नाहटा, पदाधिकारी, अभातेयुप से अजीत छाजेड़, संदीप हिंगड़, स्थानीय तेयुप पदाधिकारी एवं सदस्य आदि उपस्थित थे। तुषार मेहता की रक्तदान शिविर में विशेष भूमिका रही। संयोजक नीरज सामर द्वारा सभी का आभार व्यक्त किया गया। तेयुप मंत्री साजन मांडोत ने संचालन किया।

# डिजिटल डिटॉक्स पर लघु नाटिका मंचन

**दिल्ली।** अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी के निर्देशानुसार बच्चों में डिजिटल डिवाइस के प्रति बढ़ते आकर्षण को कम करने के लिए अणुव्रत समिति ट्रस्ट दिल्ली के अंतर्गत आचार्य तुलसी सर्वोदय बाल विद्यालय छत्तरपुर के बच्चों द्वारा एक लघु नाटिका का मंचन विद्यालय के सभागार में किया गया। अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी के प्रबन्ध न्यासी, महामंत्री भीखम चन्द सुराणा, कार्यसमिति सदस्य बाबूलाल दूगड़, अध्यक्ष मनोज बरमेचा आदि अनेक पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं की उपस्थिति में नाटक का मंचन हुआ।

# नेत्रदान जागरूकता अभियान

**गुवाहाटी।** अभातेयुप निर्देशित VISION FOR VISIONLESS के अंतर्गत तेरापंथ युवक परिषद् गुवाहाटी द्वारा नेत्रदान जागरूकता के लिए एक रैली का आयोजन किया गया। रैली में अभातेयुप सदस्य सुमनेश कोठारी, तेयुप के निवर्तमान अध्यक्ष जयंत सुराणा, अध्यक्ष सतीश कुमार भादानी, मंत्री पंकज सेठिया सहित सभी पदाधिकारीगण, संयोजक विनीत चिंडालिया, काफी संख्या में कार्यकारिणी सदस्य एवं साधारण सदस्य उपस्थित थे।

## संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
## जैन विधि-अमूल्य निधि

### नामकरण संस्कार

■ **रायपुर।** गंगाशहर निवासी रायपुर प्रवासी रेखा बच्छराज गोलछा के पुत्र-पुत्रवधु महेश-छवि गोलछा को पुत्री-रत्न प्राप्ति पर नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि द्वारा कराने का सुअवसर तेरापंथ युवक परिषद्, रायपुर को प्राप्त हुआ। संस्कारक अनिल दुगड़ ने संपूर्ण मंत्रोच्चार उच्चारण करते हुए संस्कार विधि संपादन कराई।

■ **गंगाशहर।** गंगाशहर निवासी मधुदेवी सम्पतलाल तातेड़ के सुपुत्र एवं पुत्रवधु नयन कुमार शशिकला तातेड़ की नवजात पुत्रीरत्न का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से आयोजित हुआ। जैन संस्कारक 'युवक रत्न' राजेंद्र सेठिया, पवन छाजेड़, रतन छलाणी, देवेन्द्र डागा, पीयूष लूणीया, भरत गोलछा ने विधि विधान पूर्वक जैन संस्कार विधि से नामकरण का कार्यक्रम करवाया।

### नूतन गृह प्रवेश

■ **गंगाशहर।** गंगाशहर निवासी ललिता-अशोक सेठिया के नूतन गृह का मंगल शुभारंभ जैन संस्कार विधि द्वारा जैन संस्कारक धर्मेन्द्र डाकलिया, देवेन्द्र डागा, विपिन बोथरा और रोहित बैद ने विधि विधान पूर्वक सम्पन्न करवाया।

■ **साउथ हावड़ा।** छापर निवासी साउथ हावड़ा प्रवासी स्व. सरिता-प्रदीप दुधोड़िया के सुपुत्र अरिहंत-तन्वी दुधोड़िया के नूतन गृह का प्रवेश जैन संस्कार विधि से तेरापंथ युवक परिषद् साउथ हावड़ा के सहयोग से सम्पादित हुआ। संस्कारक पवन बैंगानी एवं मनीष कुमार बैद ने कार्यक्रम संपादित करवाया।

# भिक्षु दर्शन कार्यशाला एवं भिक्षु विचार दर्शन क्विज प्रतियोगिता का आयोजन

**कांदिवली, मुंबई।**

साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञाजी के सान्निध्य में भिक्षु दर्शन कार्यशाला एवं भिक्षु विचार दर्शन क्विज प्रतियोगिता का सफल आयोजन तेरापंथ युवक परिषद् कांदिवली द्वारा किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत नमस्कार महामंत्र के द्वारा एवं विजय गीत का संगान बेंगलोर से समागत संगायक मनीष पगारिया ने किया। श्रावक निष्ठा पत्र के वाचन के पश्चात तेयुप अध्यक्ष राकेश सिंघवी ने सभी का स्वागत किया।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् से शाखा प्रभारी प्रशांत तातेड़ ने भिक्षु दर्शन पर अपने विचार प्रकट किये। इस अवसर पर अभातेयुप से मनीष रांका की विशेष रूप से उपस्थिति रही। साध्वी डॉ.मंगलप्रज्ञाजी ने अपने उद्बोधन में विस्तृत रुप से तेरापंथ की विशेषताओं को प्रस्तुत किया।

साध्वी राजुलप्रभाजी ने भिक्षु स्वामी के द्वारा चिन्हित मान्यताओं एवं मर्यादाओं पर विस्तृत चर्चा की एवं श्रावक-श्राविकाओं के प्रश्नों के समाधान के बाद चेन्नई से समागत राजेश खटेड़, जयेन्द्र खटेड़ एवं यशिका खटेड़ ने भिक्षु विचार दर्शन क्विज प्रतियोगिता का संचालन किया। क्विज में 51 प्रतियोगियों ने भाग लिया, जिन्हें 7 ग्रुप- सेवा, संस्कार, संगठन, ज्ञान, चरित्र, दर्शन एवं तप से नामांकित कर विभक्त किया गया। टीम दर्शन ने प्रथम स्थान, टीम सेवा को द्वितीय एवं टीम ज्ञान ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। रात्रि में भिक्षु भक्ति की शुरुआत श्रावकों के मंगलाचरण से हुई। तेरापंथ युवक परिषद् कांदिवली के अध्यक्ष राकेश सिंघवी ने सभी का स्वागत किया। बेंगलुरु से पधारे संगायक मनीष पगारिया ने भिक्षु स्वामी का आह्वान करते हुए एक के बाद एक अनेकों सुमधुर गीतों के साथ समा बांधा। भक्ति गीतों के क्रम में अशोक हिरण व पलक हिरण ने भी मधुर गीतों की प्रस्तुति दी।

अंत में मनीष पगारिया, भिक्षु विचार दर्शन क्विज प्रतियोगिता के संचालन हेतु चेन्नई से पधारे राजेश खटेड़, जयेंद्र खटेड़ एवं याशिका खटेड़ का सम्मान किया गया। तेयुप मंत्री पंकज कच्छारा ने सभी का आभार व्यक्त किया।

# स्वास्थ्य प्रबंधन कार्यशाला का आयोजन

**साउथ हावड़ा।**

मुनि जिनेशकुमार जी के सान्निध्य में स्वास्थ्य प्रबंधन कार्यशाला का आयोजन प्रेक्षा विहार में साउथ हावड़ा सभा द्वारा किया गया।

मुनिश्री ने कहा- शरीर धर्म-साधना का नहीं अपितु समग्र साधना का प्रमुख कारण है। स्वास्थ्य से ही साधना संभव है। आरोग्य से बढ़कर कोई लाभ नही है। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का विकास होता है। शरीर को स्वस्थ रखने में आहार की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। तामसिक, राजसिक भोजन से बचना चाहिए। सात्विक भोजन भी परिमित हितकारी, स्वास्थ्य वर्धक होना चाहिए। शरीर को स्वस्थ रखने में हमारी दिनचर्या भी निमित्त होती है। जो समय पर सोता है, समय पर भोजन करता है, योगासन, ध्यान आदि का क्रम रखता है उसका शरीर स्वस्थ रहता है।

शरीर व मन को स्वस्थ रखता है- हमारा भाव। भाव सकारात्मक हो तो शरीर व मन स्वस्थ रहता है। कार्यक्रम का शुभारंभ मुनि कुणाल कुमार जी के मंगलाचरण से हुआ। मुख्य वक्ता डा. धीरज मोठी ने 'आर्थराइटिस से कैसे बचें' विषय पर वर्तमान जीवन शैली से उत्पन्न आर्थराइटिस की समस्याओं पर प्रकाश डालते हुए उसके समाधान सुझाये।

स्वस्थता के लिए परिश्रम, घूमना, धूप सेवन, रात्रि भोजन त्याग व पोस्चर सही होना जरूरी है। बासी भोजन, फास्ट-फूड, जंक फूड से बचना चाहिए। स्वागत मनोज कोचर ने तथा कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंदजी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
14 अक्टूबर-20 अक्टूबर, 2024

# आत्मा को पोथी पढ़ने का अवसर है संवत्सरी महापर्व

**बेंगलुरु।**

साध्वी उदितयशा जी के सान्निध्य में पर्युषण महापर्व की विशिष्ट साधना के बाद संवत्सरी महापर्व के अभूतपूर्व रंग में रंगे साधक-साधिकाओं ने चौविहार/तिविहार उपवास के साथ प्रतिपूर्ण पौषध की आराधना कर धन्यता का अनुभव किया।

संवत्सरी महापर्व पर साढे.तेरह घंटे चलने वाले इस कार्यक्रम में श्रोता व दर्शक आगम वाणी का रसास्वादन करते हुए भगवान ऋषभ व महावीर के जीवन प्रसंगों को सुनकर आत्मतोष का अनुभव कर रहे थे। इन्द्रभूति आदि 11 गणधरों का भगवान के शिष्यत्व को स्वीकार करना, चन्दनबाला को दासत्व के चंगुल से मुक्त कर आत्मोद्धार के लिए संयम प्रदान करना आदि प्रसंग गौरवशाली इतिहास की अभिव्यक्ति करा रहे थे। हजारों उपवास एवं 1000 से भी अधिक पौषध रत साधकों के द्वारा मैत्री की अनुप्रेक्षा, अठारह पाप की अनुप्रेक्षा व सीमंधर स्वामी से साक्षात्कार का क्षण श्रावक-श्राविकाओं के लिए एक रोमांचकारी उपक्रम था। साध्वी वृंद ने प्रेरणा देते हुए कहा कि चौरासी लाख जीव योनियों से खमत खामणा करना अच्छी बात है लेकिन हम हमारे आस-पास वालों से व विशेष रूप से उनसे जिनसे हमारा मन मुटाव हुआ हो, या हमने उनसे बोलना बंद कर दिया हो उनसे विशेष खमतखामणा करना आवश्यक है। साध्वी उदितयशा जी आदि चारों साध्वियों के अथक परिश्रम व कार्यकर्ताओं की लगन व दायित्व निष्ठा से फ्रीडम पार्क में संवत्सरी महापर्व का सम्पूर्ण कार्यक्रम सफलता से संचालित हुआ। साध्वी श्री ने कहा कि यह सब गुरु कृपा एवं गुरु आशीर्वाद से ही संभव है।

## मासखमण तप अभिनंदन समारोह का आयोजन

# उच्च मनोबल से ही संभव है तपस्या

**गंगाशहर।**

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा गंगाशहर के तत्वावधान में शान्ति निकेतन सेवा केन्द्र में साध्वी चरितार्थप्रभाजी एवं साध्वी प्रांजलप्रभाजी के सान्निध्य में मासखमण तप अभिनन्दन समारोह आयोजित किया गया। सुशीला देवी रामपुरिया ने 29 दिनों की तपस्या, विनोद कुमार आंचलिया एवं उनकी धर्मपत्नी अंजू देवी आंचलिया ने सजोड़े 31 की तपस्या का प्रत्याख्यान किया।

तपस्या की अनुमोदना करते हुए साध्वी चरितार्थप्रभा जी ने कहा कि गंगाशहर में एक नया इतिहास बना है- पति-पत्नी ने सजोड़े एक साथ 31 दिनों की तपस्या की है और एक साथ तीन मासखमण तप की अनुमोदना की जा रही है। तपस्या उच्च मनोबल से ही संभव है। तेजस शरीर ओर कार्मण शरीर तपता है, तब बहुत बडी कर्म निर्जरा होती है और आत्मा मोक्षगामी बनती है, पाप कर्मों से हल्की होती है। साध्वीश्री श्रावक-श्राविकाओं को होली चातुर्मास तक सत्ताईस मासखमण तप करने की प्रेरणा प्रदान की। इस अवसर पर साध्वी प्रांजलप्रभा जी ने कहा कि आज गंगाशहर के चारों तीर्थों साधु-साध्वियों, श्रावक-श्राविकाओं में अपार खुशियाँ हैं। उपवास थैरेपी से बड़ी-बड़ी बीमारियां ठीक हो जाती है। आहार संयम की साधना से आयु लम्बी होती है। साध्वी श्री ने आगे कहा कि आत्म शोधन की प्रक्रिया में तप के द्वारा परिमार्जन होता है। संवर आने वाले कर्म परमाणुओं को रोकता है। संचित कर्म परमाणुओं का शोधन तप के द्वारा होता है। इसलिए तप मुक्ति का पथ है। कार्यक्रम में मंगलाचरण कमल भंसाली की गायक टीम ने किया।

साध्वीवृंद ने सामूहिक गीतिका का संगान किया। आंचलिया परिवार व रामपुरिया परिवार की ओर से तप अनुमोदना में प्रस्तुति दी गई। सैंट्रल जेल अधीक्षक बीकानेर सुमन मालीवाल ने तपस्या की अनुमोदना करते हुए कहा कि जैन धर्म, अहिंसा और तपस्या से पूरे विश्व में अपनी एक अलग पहचान रखता है। गुरूदेव से प्राप्त संदेश का वाचन जैन लूणकरण छाजेड व अमरचन्द सोनी ने किया। तेरापंथी सभा से शान्तिलाल पुगलिया, तेयुप से महावीर फलोदिया, महिला मण्डल से अंजु ललवाणी ने तपस्या की अनुमोदना की। महिला मण्डल द्वारा आयोजित खोजो ओर पाओ प्रतियोगिता के परिणाम घोषित किये।

सौरभ आंचलिया ने मुनि सुमति कुमार जी के संदेश का वाचन किया व मंजु देवी आंचलिया ने मुनि रश्मि कुमार जी द्वारा प्रदत संदेश का वाचन किया। कार्यक्रम का संचालन तेरापंथी सभा के मंत्री जतन लाल संचेती ने किया।

# 31वें विकास महोत्सव के विविध कार्यक्रम

### नाथद्वारा

साध्वी मंजूयशाजी ठाणा-4 के सान्निध्य में विकास महोत्सव बड़े उत्साह के साथ तेरापंथ सभा भवन नाथद्वारा में मनाया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ साध्वीश्री ने नमस्कार महामंत्र से किया। सामूहिक पार्श्वनाथ स्तुति का संगान किया गया। साध्वीश्री ने अपने दीक्षा प्रदाता गुरुदेव के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए कहा - अध्यात्म के क्षेत्र में उभर कर आने वाला अग्रणी नाम था विकास पुरुष गुरुदेव श्री तुलसी का। उन्होंने स्वार्थ चेतना से हटकर सदा परमार्थ का जीवन जिया। उन्होंने राजनीतिक, सामाजिक स्थितियों के परिष्कार में अपनी अग्रणी भूमिका निभाई। गुरुदेव तुलसी एक विकास पुरुष थे, 11 वर्ष की अवस्था में दीक्षा और 16 वर्ष की उम्र में ही अध्यापक बन कई संतों को अध्यापन कराने लग गए। 22 वर्ष में आप तेरापंथ संघ के आचार्य बन गए। आचार्य बनते ही साध्वी समाज में विधिवत्त शिक्षा का विकास किया। नया मोड़ अभियान द्वारा नारी जाति का उत्थान किया, नैतिक क्रांति हेतु अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात किया। जैन धर्म को देश-विदेश पहुंचाने समणी वर्ग का सूत्रपात किया। इस अवसर पर साध्वी चिन्मयप्रभाजी ,साध्वी इंदुप्रभाजी, साध्वी मानसप्रभाजी ने गीत एवं भाषण के द्वारा उनके व्यक्तित्व और कर्तृत्व को उजागर किया। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष विश्वजीत कर्णावट, फतेहलाल बोहरा, सकल जैन समाज के अध्यक्ष विश्वचंद्र समोता, संगीता कोठारी, शांता बाफना, पूनम तलेसरा, लता धाकड़, उपासक गणेश मेहता आदि कई भाई-बहनों ने गीत, मुक्तक, भाषण आदि द्वारा अपनी-अपनी अभिव्यक्ति दी। साध्वी वृंद ने समूह गीत की प्रस्तुति दी।

### पाली

मुनि सुमतिकुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में 31वें विकास महोत्सव का कार्यक्रम आयोजित हुआ। मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में बताया कि विकास महोत्सव की शुरुआत दिल्ली से हुई। मुनिश्री ने कहा कि आध्यात्मिक दृष्टि से विकास के पांच आयाम है- ज्ञान, दर्शन, चरित्र, तप और वीर्य। गुरुदेव श्री तुलसी के शासनकाल में जन संवाद ,कला, साहित्य, विहार, तपस्या, दीक्षा इत्यादि धर्म संघ के हर क्षेत्र में विकास हुआ है। मुनि देवार्यकुमार जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि मनुष्य उत्सव प्रिय प्राणी है। तेरापंथ संघ की बात करें तो यहाँ चार महोत्सव प्रचलित हैं- मर्यादा महोत्सव, भिक्षु चरमोत्सव, विकास महोत्सव और पट्टोत्सव। तेरापंथ महिला मंडल के द्वारा गीतिका का संगान किया गया। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की सदस्या विनिता बेंगानी ने मुनि सुमति कुमार जी के संसारक्षीय माता श्रद्धानिष्ठ श्राविका किरण बाई आंचलिया के बारे में संक्षिप्त जानकारी देते हुए बताया किरण बाई हमारे धर्मसंघ की सर्वप्रथम सुमंगल साधिका है। जो हर वर्ष भावना चौके में आठ माह सेवा में रत रहते हैं। मुनिश्री ने नैना गादिया को 36 की तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए।

### अहमदाबाद

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, अहमदाबाद के तत्वावधान में 31वां विकास महोत्सव मुनि मुनिसुव्रतकुमार जी, मुनि डॉ. मदनकुमारजी आदि ठाणा-5 एवं 'शासनश्री' साध्वी सरस्वतीजी आदि ठाणा- 5 के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, शाहीबाग में आयोजित किया गया। मुनि मुनिसुव्रतकुमारजी ने उद्बोधन देते हुए बताया आचार्य श्री तुलसी ने अपने पद विसर्जन के साथ युवाचार्य महाप्रज्ञ को आचार्य बना कर सबके समक्ष अनासक्त भावना का परिचय दिया। मुनि डॉ. मदनकुमारजी ने अपने वक्तव्य में बताया आचार्य भिक्षु से तेरापंथ की अनुशासन व मर्यादा युक्त विकास यात्रा चली, उत्तरवर्ती आचार्यों द्वारा साहित्य की क्रांति आदि अनेक विकास कार्यों से तेरापंथ का गौरवशाली इतिहास बना हुआ है। 'शासनश्री' साध्वी सरस्वतीजी ने विकास के पर्याय आचार्य श्री तुलसी की क्रांतिकारी बहुआयामी अवदानों की विकास यात्रा को अपने संस्मरणों के साथ व्यक्त किया। साध्वी संवेगप्रभाजी ने आचार्य तुलसी के अनेक अवदानों व उनकी विशेषताओं की जानकारी देने के साथ मुक्तक व गीतिका के द्वारा अपने भावों की प्रस्तुति दी।

### गुवाहाटी

मुनि प्रशांतकुमारजी के सान्निध्य में 31वें विकास महोत्सव का आयोजन हुआ। मुनिश्री ने कहा- आचार्य श्री तुलसी ने सम्पूर्ण मानव जाति का मार्गदर्शन किया। बीसवीं सदी में उनका एक प्रमुख नाम विश्व क्षितिज पर रहा है। उनके अवदान सबके लिए हितकारी - कल्याणकारी हैं। लगभग एक लाख किलोमीटर की पदयात्रा कर मानवजाति के उत्थान के लिए कार्य करते गए। वे कार्य करने में विश्वास करने वाले थे। आचार्य श्री तुलसी ने अपने जीवन का प्रत्येक क्षण मानवता के कल्याण में व्यतीत किया। आचार्य श्री तुलसी का जीवन विकास का जीवन था। उन्होंने जागते हुए सपने देखे और उन्हें पूरा किया। उनका कहना था कि व्यक्ति चाहे जिस धर्म को माने परंतु सबसे पहले नैतिक मूल्यों को जीवन में अपनाए। मुनि कुमुद कुमारजी ने कहा- आचार्य श्री तुलसी की प्रज्ञा, समयज्ञता, दूरदर्शिता ने संघ में अनेक नए आयाम स्थापित किए। विकास एवं विरोध दोनों ही आचार्य श्री तुलसी के साथ जुड़े रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ गुवाहाटी महिला मंडल के गीत से हुआ। सभा अध्यक्ष बाबूलाल सुराणा, तेयुप अध्यक्ष सतीश कुमार भादानी, अणुव्रत समिति अध्यक्ष बजरंग बैद, जोरहाट से धीरज कुंडलिया, सिलचर से तोलाराम गुलगुलिया, धुबड़ी से पन्नालाल बरड़िया, दीमापुर से प्रकाश बोथरा, डिफू से सुरेंद्र भरूंट, नलबाड़ी से चंद्रप्रकाश तातेड़, बरपेटारोड से सुबाहु डागा, खारुपेटिया से दीपक बैद, तेजपुर से सुरेश धारीवाल, कोकराझाड़ से किशनलाल नाहटा, नगांव से रमेश सुराणा, ग्वालपाड़ा से प्रमोद सुराणा, गुवाहाटी पूर्व सभा अध्यक्ष बजरंग कुमार सुराणा, तिनसुकिया से महिला मंडल, महासभा से बंसत कुमार सुराणा ने वक्तव्य एवं गीत की प्रस्तुति दी। आभार सभा मंत्री राजकुमार बैद ने किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि कुमुद कुमार जी ने किया।

# सामूहिक क्षमापना कार्यक्रम का आयोजन

**बीकानेर।**

जैन महासभा, बीकानेर के तत्वावधान में सामूहिक क्षमापना कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत आचार्य पीयूष सागर सूरीश्वर जी ने नवकार के मंगल मंत्रोच्चार से की। उन्होंने क्षमा की महत्ता को गीतिका के माध्यम से प्रस्तुत किया।

साध्वी प्रवन्जना श्री जी ने कहा कि क्षमा हृदय की करूणा और जीवन की साधना है। उन्होंने स्पष्ट किया कि क्षमा का उच्चारण केवल शब्दों से नहीं, बल्कि हृदय की गहराईयों से किया जाना चाहिए। साध्वी गुरूयशा जी ने भारतीय संस्कृति के पर्वों का महत्व बताते हुए कहा कि संवत्सरी महापर्व पर्वों का राजा है, जिसमें लोग 84 लाख जीवों से क्षमा मांगते हैं।

उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि क्षमा देने में अहंकार नहीं होना चाहिए और क्षमा लेने में हीन भावना नहीं आनी चाहिए।

साध्वी प्रांजल प्रभा जी ने बताया कि संसार में आध्यात्मिक और सांसारिक पर्व होते हैं। उन्होंने कहा कि बाहरी कचरे को झाड़ू से साफ किया जा सकता है, उसी तरह मन के कचरे को प्रतिक्रमण के माध्यम से साफ किया जा सकता है। मुनि सम्यकरत्नसूरी जी ने कहा कि गलती होना स्वाभाविक है और हमें क्षमायाचना करनी चाहिए। उन्होंने नम्रता, उदारता और क्षमाशीलता के महत्व पर प्रकाश डाला। मुनि पुष्पेन्द्र जी ने कहा कि जिन शासन में किसी भी जीव को कष्ट देना मना है और सभी में क्षमा की भावना होनी चाहिए।

कार्यक्रम में विनोद बाफना ने स्वागत उद्बोधन दिया, जबकि विजय कोचर ने जैन महासभा का परिचय और कार्यक्रमों की जानकारी प्रस्तुत की। इस अवसर पर सभी संघों के पदाधिकारियों ने एक-दूसरे से क्षमायाचना की। आभार जैन महासभा के महामंत्री मेघराज बोथरा ने किया और कार्यक्रम का संचालन जतनलाल संचेती ने किया।

# भिक्षु चरमोत्सव पर भव्य कार्यक्रम का आयोजन

**नई दिल्ली।**

साध्वी कुन्दनरेखा के सान्निध्य में तेरापंथ सभा दिल्ली के तत्वावधान में अणुव्रत भवन में भिक्षु चरमोत्सव का कार्यक्रम रखा गया। साध्वीश्री ने 'भिक्षु भिक्षु म्हांरी आत्मा पुकारे' गीत के आधार पर आचार्य भिक्षु के चमत्कारी नाम की व्याख्या की।

साध्वीश्री ने कहा तेरापंथ धर्मसंघ की यशस्वी परम्परा के उन्नायक आचार्य भिक्षु ने संघ को सुदृढता देने हेतु मर्यादाओं का निर्माण किया। एक आचार, एक विचार एवं एक आचार्य की सुन्दर व्यवस्था दी, अनुशासन का बोध पाठ दिया। साधिक 250 वर्षों पूर्व बनाई गयी ऐसी व्यवस्थाएं धर्म संघ के लिए वरदान बन गई। आचार्य भिक्षु अलबेले संत थे। कष्टों की परवाह किये बिना चलते रहे, रूके नहीं।

साध्वी सौभाग्ययशा जी ने कहा आचार्य भिक्षु मर्यादा और अनुशासन के पुरोधा बनकर इस धरा पर अवतरित हुए। तेरापंथ धर्मसंघ की स्थापना उनके आत्म बल एवं अध्यात्म बल की ही निष्पत्ति है। साध्वी कल्याणयशा जी ने कहा आचार्य भिक्षु का संपूर्ण जीवन भगवान महावीर के सिद्धान्तों से संचालित था। इस अवसर पर दक्षिण दिल्ली के पूर्व अध्यक्ष हीरालाल गोलछा, मॉडल टाउन दिल्ली के अध्यक्ष प्रसन्न जैन, मध्य दिल्ली महिला अध्यक्ष दीपिका छल्लाणी, पूर्व अध्यक्षा मंजु जैन, सुरेखा जैन, गिरीश जैन ने अपने भावों की प्रस्तुति गीत एवं वक्तव्यों द्वारा दी। कार्यक्रम का कुशल संचालन विकास बोथरा ने किया। इस अवसर पर मंजु सेठिया के 19 की तपस्या का अभिनन्दन भी किया गया।

# 23 मेट्रो स्टेशनों में रक्तदान शिविर का आयोजन

**बेंगलुरु।**

अभातेयुप की षष्टीपूर्ति के अवसर पर बेंगलुरु की समस्त तेरापंथ युवक परिषदों द्वारा मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव के अंतर्गत बेंगलुरु के 23 मेट्रो स्टेशनों, तेरापंथ भवन यशवंतपुर और नारायण हृदयालय में एक भव्य रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर का मुख्य उद्घाटन विधान सौधा मेट्रो स्टेशन पर अभातेयुप के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पवन मांडोत की अध्यक्षता में हुआ, जिसमें बेंगलुरु मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन लिमिटेड (BMRCL) के कई वरिष्ठ अधिकारियों की गरिमामयी उपस्थिति रही। इनमें सुमित भटनागर (निर्देशक, O&M BMRCL), रामचंद्रन (DGM संचालन, BMRCL), व्यासराज (GM रोलिंग स्टॉक, BMRCL) प्रमुख थे। सभी ने रक्तदान के महत्व पर बल देते हुए इसे समाज के प्रति एक आवश्यक दायित्व बताया।

इस विशाल रक्तदान शिविर में विभिन्न स्थानों से कुल 634 यूनिट रक्त एकत्रित किया गया। प्रमुख स्थानों में बेंगलुरु गांधीनगर परिषद् से 59 यूनिट, विजयनगर परिषद् से 86 यूनिट, राजाजीनगर परिषद् से 84 यूनिट, HBST परिषद् से 196 यूनिट, राजाराजेश्वरी नगर परिषद् से 30 यूनिट, टी दासरहल्ली परिषद् से 67 यूनिट, यशवंतपुर परिषद् से 42 यूनिट और नारायण हृदयालय से 70 यूनिट रक्त संग्रह किया गया।

इस शिविर में राष्ट्रोत्थान ब्लड बैंक और नारायण हृदयालय ब्लड बैंक ने विशेष सहयोग प्रदान किया। इस सफल आयोजन में प्रकाश मांडोत (अध्यक्ष - बेंगलुरु मेट्रो एंड सबअर्बन रेल पैसेंजर एसोसिएशन) का सराहनीय सहयोग प्राप्त हुआ।

तेरापंथ ट्रस्ट बेंगलुरु के पूर्व अध्यक्ष और प्रायोजक प्रकाश बाबेल, तेरापंथ सभा बेंगलुरु के मंत्री विनोद छाजेड़, अभातेयुप सदस्य, तेयुप बेंगलुरु के अध्यक्ष विमल धारीवाल, तेयुप विजयनगर अध्यक्ष कमलेश चोपड़ा, तेयुप राजाजीनगर अध्यक्ष कमलेश चोरडिया, तेयुप एचबीएसटी अध्यक्ष कमलेश झाबक, तेयुप आरआरनगर अध्यक्ष विकास छाजेड़, तेयुप टी दासरहल्ली अध्यक्ष कन्हैयालाल गांधी और संपूर्ण केबिनेट एवं अन्य सदस्यों की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

# संयम से आत्मा को भावित करने का पर्व है पर्युषण

**साउथ हावड़ा**

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा द्वारा प्रेक्षा विहार में युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के शिष्य मुनि जिनेशकुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में पर्युषण पर्व का आयोजन हुआ।

**1. खाद्य संयम दिवस :** मुनि श्री जिनेशकुमार जी ने पर्युषण को आत्म निरीक्षण और आत्मगुणों के संचय का पर्व बताया। उन्होंने संयमित आहार और तेला तप की महत्ता पर जोर दिया। मुनि परमानंद जी ने इसे आध्यात्मिक विकास का पर्व कहा। तेरापंथ महिला मंडल और मुनि कुणालकुमार जी ने पर्युषण गीत प्रस्तुत किया। हार्दिक दुगड़ ने 23 की तपस्या का प्रत्याख्यान किया।

**2. स्वाध्याय दिवस :** मुनि श्री ने स्वाध्याय को आत्मा का अध्ययन और साधना का मुख्य अंग बताया। मुनि श्री ने भगवान महावीर की भव परंपरा के तीसरे भव मरीचि की व्याख्या करते हुए कहा अहंकार पतन की निशानी है। उन्होंने अहंकार के पतन और विनम्रता पर बल दिया। मुनि परमानंद जी और मुनि कुणालकुमार जी ने स्वाध्याय के लाभ पर चर्चा की। तेरापंथ महिला मंडल ने गीत प्रस्तुत किया।

**3. सामायिक दिवस :** मुनि श्री ने सामायिक के महत्व को उजागर करते हुए सामायिक करने की प्रेरणा प्रदान की। मुनिश्री के सान्निध्य में विभिन्न परिषदों ने अभिनव सामायिक का आयोजन किया।

**4. वाणी संयम दिवस :** मुनि श्री ने वाणी संयम के महत्व पर जोर दिया, जिससे विवाद कम होते हैं और ऊर्जा का संचय होता है। मुनि परमानंद जी ने वाणी को सकारात्मक और रचनात्मक बनाने पर बल दिया। मुनि कुणालकुमार जी ने गीत प्रस्तुत किया।

**5. अणुव्रत चेतना दिवस :** मुनि श्री ने अणुव्रत को नैतिकता और चरित्र शुद्धि का आधार बताते हुए स्वस्थ समाज की संरचना का संदेश दिया। मुनि परमानंद जी ने अणुव्रत को दुर्गुणों का स्पीड ब्रेकर कहा। मुनि कुणालकुमार जी ने अणुव्रत गीत प्रस्तुत किया।

**6. जप दिवस :** नमस्कार महामंत्र के सवा लाख जप अनुष्ठान में 1400 लोगों ने भाग लिया। मुनि श्री ने मंत्र जप को चंचल मन को स्थिर करने वाला बताया। मुनि परमानंद जी ने इसे प्रभु स्मरण का पर्व कहा। मुनि कुणालकुमार जी ने प्रेरणादायक गीत प्रस्तुत किया।

**7. ध्यान दिवस :** मुनि श्री ने आत्म शुद्धि के लिए स्वाध्याय और ध्यान को महत्वपूर्ण बताते हुए कहा- प्रेक्षा ध्यान से आंतरिक शांति और संतोष प्राप्त होता है। मुनि परमानंद जी ने पौषध व्रत की प्रेरणा दी। मुनि कुणालकुमार जी ने प्रेक्षा ध्यान पर गीत प्रस्तुत किया।

**8. संवत्सरी महापर्व :** मुनि श्री ने इसे विश्व मैत्री और आत्मावलोकन का पर्व बताया, जो दिलों को जोड़ने और क्षमा देने का प्रतीक है। मुनि परमानंद जी ने इसे आत्मपरिष्कार और संस्कारों के प्रति आस्था का पर्व कहा। मुनि कुणालकुमार जी ने संवत्सरी गीत प्रस्तुत किया।

**9. क्षमापना दिवस :** सामूहिक खमतखामणा के अवसर पर मुनि जिनेशकुमार जी ने क्षमा को प्रेम और विश्वास का प्रतीक बताया। मुनिश्री ने कहा कि क्षमा दिव्य दृष्टि है, पारसमणि और आभ्यन्तर तप है। यह शोधन की प्रक्रिया है, सत्य आदि सभी गुणों की जननी है। खमतखामणा से मानसिक प्रसन्नता, वीतरागता, परिवार में सौहार्दपूर्ण वातावरण, शांति की प्राप्ति, कर्मो की विपुल निर्जरा, चित्त की प्रसन्नता, सकारात्मक भावों व सद्गुणों का विकास होता है। मुनि परमानंद जी और मुनि कुणाल कुमार जी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। तेरापंथ कन्या मंडल ने मैत्री गीत प्रस्तुत किया और बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे।

विकास परिषद के सदस्य बनेचंद मालू ने उपस्थित धर्मसभा का आचार्य प्रवर व मुनिवृन्दों से सामूहिक खमतखामण करवाया। महासभा के महामंत्री विनोद बैद, कलकत्ता सभा के मंत्री उम्मेद नाहटा, साउथ हावड़ा सभा के अध्यक्ष लक्ष्मीपत बाफणा, मुख्य न्यासी संजय नाहटा, तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष गगनदीप बैद तेरापंथ महिला मंडल की सहमंत्री खुशबू दुगड़, टी.पी.एफ. की अध्यक्षा खुशबु कोठारी, अणुव्रत समिति हावड़ा के अध्यक्ष दीपक नखत ने अपने विचार व्यक्त करते हुए खमतखामणा किया। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री बसंत पटावरी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
14 अक्टूबर-20 अक्टूबर, 2024

## संबोधि

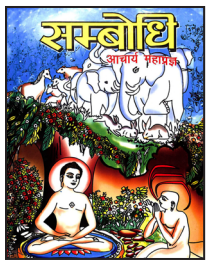


# गृहिधर्मचर्या

**-आचार्यश्री महाप्रज्ञ**

**३. सद्यः प्रातः समुत्थाय, स्मृत्वा च परमेष्ठिनम्।**
**प्रातः कृत्यान्निवृत्तः सन्, कुर्यादात्मनिरीक्षणम्॥**

**सवेरे जल्दी उठकर नमस्कार मंत्र का स्मरण कर, शौच आदि प्रातः कृत्य से निवृत्त होकर मनुष्य आत्म-निरीक्षण करे।**

आत्म-निरीक्षण के लिए एक कवि ने कहा है-'सूर्य जीवन का एक भाग लेकर चला जा रहा है। उठो और देखो, आज कौन सा सुकृत काम किया है।' यह धर्म का एक अंग है। सबके लिए इसकी अपेक्षा है। किन्तु एक धार्मिक व्यक्ति के लिए अति आवश्यक है। आत्मदर्शन के बिना वृत्तियों का परिमार्जन नहीं होता। इसके लिए तीन चिंतन हैं :

१. मैंने क्या किया है?

२. मेरे लिए क्या करना बाकी है?

३. ऐसा कौन-सा कार्य है जिसे मैं नहीं कर सकता?

**जैसे शरीर के लिए आवश्यक किए जाते हैं वैसे आत्मा के लिए भी होने चाहिए। एक विचारक ने कहा है- 'मनुष्य शरीर को खुराक देता है, किन्तु आत्मा को नहीं।' आत्मा को बिना भोजन दिए मनुष्य का जीवन अंत में अर्थहीन सिद्ध होता है। उसमें रस उत्पन्न नहीं होता। आदमी करीब-करीब मरा हुआ जीता है। इसीलिए यहां कहा गया है कि अपने को देखो, जानो।**

मैं कौन हूं? कहां से आया हूं? क्या है जीवन का उद्देश्य ? क्या मैं उसकी पूर्ति का प्रयत्न कर रहा हूं? ये कुछ ऐसे प्रश्न हैं जो स्वयं से पूछने को हैं। उत्तर की जल्दी नहीं करना है, प्रश्नों की प्यास बढ़ानी है।

**४. सामायिकं प्रकूर्वीत, समभावस्य लब्धये।**
**भावना भावयेत् पुण्याः, सत्संकल्पान् समासृजेत्॥**

**समभाव की प्राप्ति के लिए सामायिक करे, आत्मा को पवित्र भावनाओं से भावित करे और शुभ संकल्प करे।**

संकल्प का अर्थ है-दृढ़ निश्चय। हम क्या है? अपने संकल्पों से भिन्न और कुछ नहीं हैं। जैसे हम संकल्प करते हैं वैसे ही बन जाते हैं। अच्छे संकल्प अच्छा बनाते हैं, बुरे संकल्प बुरा। मनुष्य अच्छा बनने के लिए बुरे संकल्पों के स्थान पर अच्छों को स्थान दे। मैं दीन हूं, दुर्बल हूं, अज्ञ हूं, रोगी हूं, दुःखी हूं, अभागा हूं आदि हीन संकल्प मनुष्य को वैसा ही बना देते हैं। यदि इनके स्थान पर मनुष्य पवित्र संकल्पों को संजोए तो वह स्वस्थ, सशक्त, विज्ञ, सुखी और सौभाग्यशाली बन सकता है।

'मेरा मन पवित्र संकल्प वाला हो। हम दीन बन कर न जिएं। कार्य करते हुए हम सौ वर्ष तक जिएं' ये क्या है जो हजारों वर्षों से संकल्प का महत्त्व समझाते आ रहे हैं। आज वैज्ञानिकों ने मानस की अपार क्षमता को परखा है और वे कहते हैं- 'तुम अपने संकल्प से भिन्न कुछ नहीं हो।' श्रावक आत्म-शोधन करता हुआ संकल्पवान बने। उसे क्या करना है और क्या होना है, भगवान् ने इसका जो उत्तर दिया वह इस अध्याय के दसवें श्लोक में है।

**५. स्थैर्यं प्रभावना भक्तिः, कौशलं जिनशासने।**
**तीर्थसेवा भवन्त्येता, भूषाः सम्यग्दृशो ध्रुवम्॥**

**धर्म में स्थिरता, प्रभावना-धर्म का महत्त्व बढ़े वैसा कार्य करना, धर्म या धर्म-गुरु के प्रति भक्ति रखना, जैन शासन में कौशल प्राप्त करना और तीर्थसेवा-चतुर्विध संघ को धार्मिक सहयोग देना-ये सम्यक्त्व के पांच भूषण हैं।**

(क्रमशः)

## श्रमण महावीर

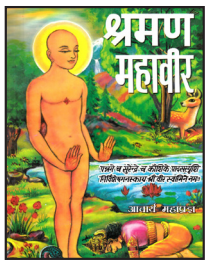


# करुणा का अजस्त्र स्रोत

(पिछला शेष)

अच्छंदक अवसर की खोज में था। एक दिन उसने देखा, भगवान् अकेले खड़े हैं। अभी ध्यान मुद्रा में नहीं हैं। वह भगवान् के निकट आकर बोला, 'भंते! आप सर्वत्र पूज्य हैं। आपका व्यक्तित्व विशाल है। मैं जानता हूं, महान् व्यक्तित्व क्षुद्र व्यक्तित्वों को ढांकने के लिए अवतरित नहीं होते। मुझे आशा है कि भगवान् मेरी भावना का सम्मान करेंगे।'

इधर अच्छंदक अपने गांव की ओर लौटा और उधर भगवान् वाचाला की ओर चल पड़े। उनकी करुणा ने उन्हें एक क्षण भी वहां रुकने की स्वीकृति नहीं दी।

## गंगा में नौका-विहार

ऐसा कौन मनुष्य है जिसने प्रकृति के रंगमंच पर अभिनय किया हो और अपना पुराना परिधान न बदला हो। जहां बदलना ही सत्य है वहां नहीं बदलने का आग्रह असत्य हो जाता है।

**भगवान् महावीर अहिंसा और आकिंचन्य की संतुलित साधना कर रहे थे। उनके पास न पैसा था और न वाहन। वे अकिंचन थे, इसलिए परिव्रजन कर रहे थे। वे अहिंसक और अकिंचन-दोनों थे, इसलिए पद-यात्रा कर रहे थे।**

भगवान् श्वेतव्या से प्रस्थान कर सुरभिपुर जा रहे थे। बीच में गंगा नदी आ गई। भगवान् ने देखा, दो तटों के बीच तेज जलधारा बह रही है, जैसे दो भावों के बीच चिंतन की तीव्र धारा बहती है। उनके पैर रुक गए। ध्यान के लिए स्थिरता जरूरी है। स्थिरता के लिए एक स्थान में रहना जरूरी है। किन्तु अकिंचन के लिए अनिकेत होना जरूरी है और अनिकेत के लिए परिव्रजन जरूरी है। इस प्राप्त आवश्यक धर्म का पालन करने के लिए भगवान् नौका की प्रतीक्षा करने लगे।

सिद्धदत एक कुशल नाविक था। वह जितना नौका-संचालन में कुशल था, उतना ही व्यवहार-कुशल था। यात्री उसकी नौका पर बैठकर गंगा को पार करने में अपनी कुशल मानते थे।

सिद्धदत्त यात्रियों को उस पार उतारकर फिर इस ओर आ गया। उसने देखा, तट पर एक दिव्य तपस्वी खड़ा है। उसका ध्यान उनके चरणों पर टिक गया। वह बोला, 'भगवन्! आइए, इस नौका को पावन करिए।'

'क्या तुम मुझे उस पार ले चलोगे?' भगवान् ने पूछा।

नाविक बोला,' भंते! यह प्रश्न मेरा है। क्या आप मेरी नौका को उस पार ले चलेंगे?'

सिद्धदत का प्रश्न सुन भगवान् मौन हो गए। उनका मौन कह रहा था कि उस पार स्वयं को पहुंचना है। उसमें सहयोगी तुम भी हो सकते हो और मैं भी हो सकता हूं।

भगवान् नौका में बैठ गए। उसमें और अनेक यात्री थे। उनमें एक था नैमित्तिक । उसका नाम था खेमिल। नौका जैसे ही आगे बढ़ी, वैसे ही दायीं ओर उल्लू बोला।

खेमिल ने कहा, 'यह बहुत बुरा शकुन है। मुझे भंयकर तूफान की आशंका हो रही है।' नैमित्तिक की बात सुन नौका के यात्री घबरा उठे।

इधर नौका गंगा नदी के मध्य में पहुंची, उधर भंयकर तूफान आया। नदी का जल आकाश को चूमने लगा। नौका डगमगा गई। उत्ताल तरंगों के थपेड़ों से भयाक्रांत यात्री हर क्षण मौत की प्रतीक्षा करने लगे। भगवान् उन प्रकंपित करने वाले क्षणों में भी निष्कंप बैठे थे। उनके मन में न जीने की आशंसा थी और न मौत का आतंक। जिनके मन में मौत के भय का तूफान नहीं होता, उसे कोई भी तूफान प्रकंपित नहीं कर पाता।

तूफान आकस्मिक ढंग से ही आया और आकस्मिक ढंग से ही शान्त हो गया। यात्रियों के अशान्त मन अब शान्त हो गए। भगवान् तूफान के क्षणों में भी-शान्त थे और अब भी शान्त हैं। खेमिल ने कहा, 'इस तपस्वी ने हम सबको तूफान से बचा लिया।' यात्रियों के सिर उस तरुण तपस्वी के चरणों में झुक गए। नाविक ने कहा, 'भंते! आपने मेरी नैया पार लगा दी। मुझे विश्वास हो गया है कि मेरी जीवन-नैया भी पार पहुंच जाएगी।'

नौका तट पर लग गई। यात्री अपने-अपने गंतव्य की दिशा में चल पड़े भगवान् थूणाक सन्निवेश की ओर प्रस्थान कर गए।

(क्रमशः)

# धर्म है उत्कृष्ट मंगल

**-आचार्यश्री महाश्रमण**

## अहिंसा समयं चेव

ये नौ भंग प्राणातिपात-विरमक व्यक्ति से संबंधित हैं। जिन जीवों से प्राणातिपात विरमण किया जाता है, उनको साथ में जोड़ने पर प्राणातिपात-विरमण के ८१ विकल्प बन जाते हैं। जीवों के नौ प्रकार- १. पृथ्वीकायिक जीव २. अप्कायिक जीव ३. तेजस्कायिक जीव ४. वायुकायिक जीव ५. वनस्पतिकायिक जीव ६. द्वीन्द्रिय जीव ७. त्रीन्द्रिय जीव ८. चतुरिन्द्रिय जीव ९. पंचेन्द्रिय जीव। इन नौ प्रकार के जीवों में प्रत्येक के साथ पूर्वोल्लिखित तीनकरण-तीनयोग के नौ विकल्प करने से ६५६ = प१ भंग बन जाते हैं, जैसे–

१. पृथ्वीकायिक जीवों की हिंसा करना नहीं मन से।

२. पृथ्वीकायिक जीवों की हिंसा करना नहीं वचन से।

३. पृथ्वीकायिक जीवों की हिंसा करना नहीं काय से।

४. पृथ्वीकायिक जीवों की हिंसा करवाना नहीं मन से।

५. पृथ्वीकायिक जीवों की हिंसा करवाना नहीं वचन से।

६. पृथ्वीकायिक जीवों की हिंसा करवाना नहीं काय से।

७. पृथ्वीकायिक जीवों की हिंसा का अनुमोदन करना नहीं मन से।

८. पृथ्वीकायिक जीवों की हिंसा का अनुमोदन करना नहीं वचन से।

६. पृथ्वीकायिक जीवों की हिंसा का अनुमोदन करना नहीं काय से।

**पृथ्वीकायिक के जैसे नौ भंग बने हैं, वैसे ही अप्कायिक आदि के भी नौ–नौ भंग बनाये जाते हैं। कुल ८१ भंग प्राणातिपात–विरमण (अहिंसा महाव्रत) के निष्पन्न होते हैं।**

तत्त्वार्थ सूत्र में हिंसा (प्राणातिपात) की परिभाषा की गई है-प्रमत्तयोगाद् प्राणव्यपरोपणं हिंसा प्रमादयुक्त योग से जीव का प्राणवियोजन करना हिंसा है।

## सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात्

विचार-सम्प्रेषण का माध्यम है भाषा। वह लिखित भी हो सकती है और भाषित भी हो सकती है। लिखित भी शब्द होते हैं और भाषित भी शब्द होते हैं। शब्द जड़ होते हैं परन्तु हमारी भावाभिव्यक्ति के सक्षम माध्यम बनते हैं। कलह और झगड़े के माध्यम भी शब्द बन जाते हैं तो शांति और सौहार्द को स्थापित करने में भी शब्दों का योगदान होता है। जैसे भाषित शब्द वैमनस्य और सौमनस्य पैदा कर सकते हैं वैसे ही लिखित शब्द भी वैमनस्य और सौमनस्य की स्थिति को उत्पन्न कर सकते हैं। भाषित और लिखित शब्द मनुष्य का सही मार्गदर्शन भी कर सकते हैं और मनुष्य को गुमराह भी कर सकते हैं। वास्तव में देखा जाए तो यह सारी शक्ति मूलतः शब्द की नहीं है, अन्तर्यभित भाव ही मूल स्रोत होते हैं। शब्द तो पोस्टमैन की भांति एक व्यक्ति के भावों को दूसरे व्यक्ति तक पहुंचा देते हैं। परन्तु माध्यम का काम शब्द करते हैं, अभिव्यक्त शब्द होते हैं। इसलिए शब्दों का भी महत्व है। सतही भाग शब्द का है और गहराई का भाग भावों का है, यह भी यथार्थ प्रतीत होता है। गहराई तक जाने के लिए भी पहले सतह तक पहुंचना होता है।

शब्द का परिष्कार करने का अर्थ है भाव परिष्कार की ओर प्रस्थान करना। शब्द अपने आपमें न सत्य है, न झूठ है। यह तो जड़ मात्र है, उनके साथ जैसा भाव जुड़ता है वे वैसे बन जाते हैं। शब्द के साथ सत्य का भाव जुड़ता है तो वह सत्य भाषा हो जाती है। शब्द के साथ मृषा का भाव जुइता है तो वह मृषा भाषा बन जाती है। शब्द के साथ प्रिय का भाव जुड़ा वह प्रिय भाषा बन जाती है। शब्द के साथ कटुता का भाव जुड़ा वह कटु भाषा बन जाती है। आध्यात्मिक जगत् में सर्वाधिक महत्त्व भाव का है। शरीर, वाणी और मन का अपने आप में विशेष महत्त्व नहीं है। भाव के साथ जुड़ने से वे अच्छे या बुरे बनते हैं, उनकी प्रवृत्ति अच्छी या बुरी बनती है।

जैन आगमों में चार प्रकार की भाषा बतलाई गई है-सत्यभाषा, असत्यभाषा, मिश्रभाषा और व्यवहार भाषा।

**सत्यभाषा–** यथार्थ का प्रतिपादन करने वाली भाषा।

**असत्यभाषा–** अयथार्थ का प्रतिपादन करने वाली भाषा।

**मिश्र भाषा–** यथार्थ और अयथार्थ के निश्चित रूप का प्रतिपादन करने वाली भाषा।

**व्यवहार भाषा–** आदेश, निर्देश एवं उपदेश को अभिव्यक्ति देने वाली भाषा। जैसे तुम यह करो, तुम यह मत करो, इत्यादि।

(क्रमशः)

## जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

### आचार्यश्री रायचन्दजी युग

**मुनिश्री चिमनजी (सूरवाल) दीक्षा क्रमांक : 147**

मुनिश्री की खुराक अच्छी थी पर खान–पान में बहुत संतोष रखते थे। अधिकांशतः ऊनोदरी तथा तपस्या करते ही रहते थे। आपने सैंकड़ों उपवास, अनेक बेले, तेले तथा ऊपर में पैंतीस दिन का तप किया। तप की तालिका इस प्रकार है– 4/2, 5/2, 6/1, 7/1, 8/3, 9/3, 13/1, 31/1, 35/1।

**– साभार: शासन समुद्र –**

संघीय समाचारों का
मुखपत्र

तेरापंथ टाइम्स की प्रति पाने के लिए क्यूआर कोड स्कैन करें या आवेदन करें
https://abtyp.org/prakashan

समाचार प्रकाशन हेतु ई-मेल करें
abtyptt@gmail.com

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

तेरापंथ टाइम्स
ऑनलाईन पढ़ने के लिए
terapanthtimes.org

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
14 अक्टूबर-20 अक्टूबर, 2024

# अभातेयुप निर्देशित मंथन 'कल-आज और कल' के विभिन्न आयोजन

## पूर्वांचल-कोलकाता

अभातेयुप के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद, पूर्वांचल-कोलकाता द्वारा मंथन कार्यक्रम राधे पैलेस, लेकटाउन में आयोजित हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ सामूहिक मंगलाचरण से किया गया। तेयुप पूर्वांचल-कोलकाता अध्यक्ष नवीन सिंघी ने पधारे हुए सभी पूर्वाध्यक्ष, परामर्शक, पदाधिकारी, कार्यसमिति सदस्यों का स्वागत किया। अनुभव सत्र में सभी ने अपना अनुभव साझा किया। तेयुप द्वारा आयोजित कार्यक्रम एवं निर्देशित होने वाले सभी उपक्रम को सदन के समक्ष रखा गया। तेयुप पूर्वांचल-कोलकाता के पूर्व अध्यक्षों ने परिषद् की गति प्रगति हेतु अनेक सुझाव दिये। वर्तमान पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने सभी के सुझावों को तत्काल प्रभाव से क्रियान्वित किए जाने की रूपरेखा रखी एवं हर कार्य के संयोजक नियुक्त किये गए।

## विजयनगर

अभातेयुप के 60 साल बेमिसाल के अंतर्गत तेयुप विजयनगर ने वेस्टफोर्ट होटल के सभागार में विशेष कार्यक्रम मंथन- कल, आज और कल का भव्य आयोजन किया। पधारे हुए सभी अध्यक्षों का तिलक एवं पट्ट द्वारा स्वागत किया गया। विजयगीत के संगान के पश्चात श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन संस्थापक अध्यक्ष सुशील चौरड़िया ने किया। अध्यक्ष कमलेश चोपड़ा ने तेयुप विजयनगर के गौरवशाली अध्यक्ष एवं मंत्री परंपरा का संक्षिप्त इतिहास प्रस्तुत करते हुए सबका अभिनंदन किया। तेयुप विजयनगर के गौरवशाली इतिहास पर आधारित एक वीडियो की प्रस्तुति की गई। पूर्व अध्यक्ष एवं अभातेयुप के वरिष्ठ उपाध्यक्ष पवन मांडोत ने मंथन बैठक के उद्देश्यों एवं प्रारूप की जानकारी प्रदान करते हुए परिषद् को विकासशील बनने की प्रेरणा प्रदान देते हुए संगठन को मजबूत करने के लिए सुझाव रखे। मुख्य कार्यक्रम में तेयुप पूर्व अध्यक्ष दिनेश मरोठी, अमित दक के संयोजन में परिषद् के स्थाई आयाम एटीडीसी, आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकलस, प्रज्ञा केंद्र, कंप्यूटर लैब, सेवा सारथी, आचार्य तुलसी सेवा केंद्र आदि प्रकल्पों, विषयों पर सृजनात्मक चर्चा हुई। कार्यक्रम के अंत में संस्थापक अध्यक्ष सुशील चौरडिया ने अपने आपको और सभी युवाओं की ऊर्जा का समुचित उपयोग करने की प्रेरणा कविता के माध्यम से व्यक्त की। कार्यक्रम के संवाद, चर्चा, परिचर्चा में पूर्व अध्यक्ष, मंत्री एवं वर्तमान पदाधिकारियों ने भाग लिया। समापन सत्र में सभी ने परिषद् के 18 साल के इतिहास का उत्सव मनाने, नए विचारों को सामने लाने हेतु सशक्त मंच बनाने की सहमति बनी। सभी अध्यक्ष एवं मंत्री गण को विशेष स्मृति चिन्ह भेंट किए गए। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार मंत्री संजय भटेवरा द्वारा किया गया।

## बीदासर

अभातेयुप द्वारा संगठन के क्षेत्र में निर्देशित कार्यक्रम मंथन का आयोजन तेरापंथ युवक परिषद, बीदासर द्वारा किया गया। तेयुप अध्यक्ष पारस बैद ने समस्त युवा साथियों और सभी अभूतपूर्व अध्यक्ष एवं मंत्री का स्वागत करते हुए अभिनंदन किया। संगठन के कल, आज और कल पर विचार विमर्श करते हुए निर्मल कुमार बैंगवानी एवं भैंरुदान बच्छावत ने मुख्य बिंदुओं पर प्रकाश डाला, अपने अनुभवों को साझा किया और संगठन को सुदृढ़ करने हेतु अपने विचार व्यक्त किए। तेयुप मंत्री रितिक बोथरा ने मंच संचालन सहित सभी का आभार व्यक्त करते हुए अपने विचार प्रस्तुत किए।

## उदयपुर

अभातेयुप के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद उदयपुर द्वारा मंथन कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें वर्तमान तेयुप अध्यक्ष भूपेश खमेशरा, मंत्री साजन मांडोत एवं उनकी प्रबंध मंडल टीम के अलावा कार्य समिति सदस्य एवं कई पूर्व अध्यक्ष, मंत्री एवं पूर्व सदस्य उपस्थित थे। तेरापंथ युवक परिषद उदयपुर की गौरवशाली 50 वर्ष की कार्य प्रणाली एवं उनकी उपलब्धियां याद करते हुए वर्तमान एवं भविष्य में संगठन में मजबूती लाई जा सके और सदस्यों की क्षमताओं का पूर्ण उपयोग किया जा सके इस बारे में मंथन किया गया। मंच संचालन अजीत छाजेड़ ने तथा आभार ज्ञापन उपाध्यक्ष महेंद्र बोहरा ने किया।

## रायपुर

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के 60वें स्थापना दिवस उपलक्ष्य में तेरापंथ युवक परिषद्, रायपुर द्वारा मंथन 'कल-आज और कल' का आयोजन किया गया, जिसमें 7 पूर्व अध्यक्षों की सहभागिता रही। पूर्व अध्यक्षों ने अपने अनुभव प्रस्तुत करते हुए आगामी आयोजनों हेतु मार्गदर्शन प्रदान किया। तेयुप अध्यक्ष वीरेंद्र डागा व मंत्री गौरव दुगड़ ने पधारे सभी पूर्व अध्यक्षों का स्वागत अभिनन्दन किया गया। इसके अतिरिक्त तेयुप द्वारा अभातेयुप के 60 वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में श्री लाल गंगा पटवा भवन, टैगोर नगर में शिवनाथ ब्लड बैंक के सहयोग से रक्तदान शिविर का आयोजन किया जिसमें15 यूनिट रक्त संग्रह किया गया।

## इस्लामपुर

तेयुप इस्लामपुर द्वारा मंथन कार्यक्रम का आयोजन स्थानीय तेरापंथ भवन में किया गया। सामूहिक नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। तेयुप अध्यक्ष राकेश धाड़ेवा ने समस्त युवा साथी और संपूर्ण अभूतपूर्व अध्यक्ष एवं मंत्री का स्वागत किया। स्थानीय तेयुप के संस्थापक एवं अभूतपूर्व अध्यक्ष एवं मंत्री गण की गरिमामय उपस्थिति रही। संगठन के कल-आज और कल पर विचार विमर्श करते हुए अभूतपूर्व अध्यक्ष एवं मंत्री समूह ने मुख्य बिंदुओं पर प्रकाश डाला और अपने अनुभवों को साझा किया। संगठन को सुदृढ़ करने हेतु अपने विचार व्यक्त किए एवं तेयुप को आर्थिक अनुदान भी प्रदान करवाया। तेयुप मंत्री मुदित पिंचा ने मंच संचालन सहित सभी का आभार व्यक्त करते हुए अपने विचार प्रस्तुत किए।

## कोलकाता

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप कोलकाता मेन द्वारा 60 साल बेमिसाल के अंतर्गत 'मंथन - कल, आज और कल' कार्यक्रम का आयोजन परिषद कार्यालय में किया गया। इस अवसर पर परिषद के पूर्व अध्यक्ष एवं पदाधिकारी गण सहित वर्तमान प्रबंध मंडल एवं कार्यकर्ता उपस्थित थे। वर्तमान अध्यक्ष विवेक सुराणा ने मंगलाचरण एवं अतिथियों के स्वागत में अपना वक्तव्य रखा तथा मंथन के उद्देश्य को सबके समक्ष प्रस्तुत किया। सभी पूर्व अध्यक्षों ने अपने अनुभव साझा किए। पूर्व अध्यक्ष सुनील दुगड़ ने संगठन के हर कार्य को गुणवता पूर्वक करने का सुझाव दिया। वर्तमान नेतृत्व एवं पूर्व प्रबंध मंडल का विभिन्न विषयों पर विचारों, सुझावों का आदान-प्रदान हुआ। मंत्री नमन सुराणा ने आभार ज्ञापन किया।

## अमराईवाड़ी-ओढव

अभातेयुप के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद, अमराईवाड़ी-ओढव द्वारा साध्वी काव्यलताजी के सान्निध्य में मंथन (कल, आज और कल) कार्यक्रम का विशेष आयोजन सिंघवी भवन, अमराईवाड़ी में किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री ने नमस्कार महामंत्र के द्वारा की। कार्यक्रम की संक्षिप्त जानकारी तेयुप मंत्री सुनील चिप्पड़ ने दी। स्वागत वक्तव्य तेयुप अध्यक्ष मुकेश सिंघवी ने किया। साध्वी काव्यलताजी ने अपने उद्बोधन में कहा- कल हमारा अच्छा रहा, विकास के चरण गतिशील रहें, आज हमारा सुनहरा हो, भविष्य हमारा सुन्दरतम हो। इसके लिए हमारे सामने 2025 का गुरुदेव का चार्तुमास है। चार्तुमास में अमराईवाडी युवा शक्ति को जो भी दायित्व मिले उसे निष्ठा, समर्पण, जागरुकता के साथ निभाएं। पूर्व अध्यक्ष एवं मंत्रियों के साथ वर्तमान तेयुप टीम ने प्रगति हेतु विचार विमर्श किया। कार्यक्रम का संचालन दिनेश टुकलिया ने किया। आभार ज्ञापन तेयुप संगठन मंत्री अल्पेश हिरण ने किया।

## लिलुआ

तेरापंथ युवक परिषद, लिलुआ द्वारा अभातेयुप निर्देशित मंथन का आयोजन किया गया। नमस्कार महामंत्र के सामूहिक संगान से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। तेयुप अध्यक्ष अमित बांठिया ने समस्त युवा साथियों और सभी पूर्व अध्यक्ष एवं मंत्री का स्वागत किया। संगठन के कल, आज और कल पर विचार विमर्श करते हुए भूतपूर्व अध्यक्ष एवं मंत्रियों ने अपने अनुभवों को साझा किया और संगठन को सुदृढ़ करने हेतु अपने विचार व्यक्त किए। तेयुप मंत्री जयंत घोड़ावत ने मंच संचालन एवं आभार व्यक्त करते हुए अपने विचार प्रस्तुत किए। प्रश्न उत्तर एवं चर्चा-प्रतिचर्चा के पश्चात् मंगल पाठ के साथ कार्यक्रम को संपन्न किया गया।

## हासन

अभातेयुप के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद् हासन द्वारा 'मंथन : कल आज और कल' का आयोजन तेरापंथ भवन हासन में किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र और विजय गीत से की गई। इस कार्यक्रम में अभूतपूर्व अध्यक्ष, मंत्री एवं परिषद् सदस्यों की उपस्थिति रही। आयोजन का दिन तेरापंथ युवक परिषद हासन का रजत जयंती वर्ष का भी दिन था। सभी अभूतपूर्व अध्यक्ष, मंत्री का सम्मान वर्तमान युवक परिषद के अध्यक्ष नितेश सुराणा, मंत्री मनीष तातेड ने किया। प्रथम अध्यक्ष महावीर भंसाली ने इस अवसर पर कहा कि संस्था के लिए धन का संचय, धैर्य, कर्मठता और सभी का साथ बहुत आवश्यक है। उपस्थित सदस्यों ने विभिन्न विषयों पर अपने विचार व्यक्त किए। टीपीएफ हासन को लगातार तीन साल से बेस्ट ब्रांच पुरस्कार से सम्मानित होने पर अध्यक्ष भरत भंसाली का अभिवादन किया गया। मनीष तातेड ने आभार व्यक्त किया।

## भीलवाड़ा

साध्वी कीर्तिलता जी ठाणा-4 के सान्निध्य में मंथन : कल, आज और कल का आयोजन तेरापंथ भवन, नागोरी गार्डन में किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत सामूहिक नमस्कार महामंत्र से की गई। तेयुप भीलवाड़ा के अध्यक्ष पीयूष रांका ने स्वागत वक्तव्य देते हुए कार्यक्रम की सम्पूर्ण जानकारी प्रदान की। साध्वी कीर्तिलता जी एवं साध्वी श्रेष्ठप्रभा जी ने भी अपना वक्तव्य प्रदान किया। तेयुप भीलवाड़ा के पूर्व अध्यक्ष, पूर्व मंत्री एवं वर्तमान प्रबंध मंडल के साथी उपस्थित रहे। पूर्व अध्यक्षों ने अभातेयुप के त्रिआयमी उद्देश्य सेवा, संस्कार एवं संगठन के अंतर्गत विभिन्न आयामों की जानकारी एवं अपने अनुभव साझा किए एवं उपस्थित सदस्यों ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार मंत्री महावीर खाब्या ने किया।

## बेंगलुरु

अभातेयुप के तत्वावधान में आयोजित मंथन कल, आज और कल कार्यक्रम का आयोजन तेरापंथ युवक परिषद्, बेंगलुरु द्वारा तेरापंथ सभा भवन गांधीनगर में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। कार्यक्रम में परिषद् के वर्तमान और भविष्य पर गहन विचार-विमर्श किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी उदितयशा जी के मंगलाचरण से हुआ। प्रज्ञा संगीत सुधा ने विजय गीत की प्रस्तुति दी। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन भूतपूर्व अध्यक्ष देवराज रायसोनी द्वारा किया गया। वर्तमान अध्यक्ष विमल धारीवाल ने सभी का स्वागत और अभिनंदन करते हुए कार्यक्रम के महत्व पर प्रकाश डाला। साध्वी उदितयशा जी ने अपने उद्बोधन में कहा, मंथन की प्रक्रिया तब ही प्रारंभ होगी जब हम तपेंगे और जमेंगे। व्यक्ति जब तपता है और जमता है, तब ही नवनीत प्राप्त होता है। मंथन का सार्थक और निरर्थक दोनों रूप हो सकते हैं, लेकिन हमें इस पर चिंतन करना होगा कि हमारी चर्चा अतीत का सही सिंहावलोकन कर रही है या नहीं, और क्या यह भविष्य के लिए ठोस दिशा निर्देश दे रही है। 'मैं' से 'हम', 'हम' से 'संघ', और अंत में 'गुरु' सर्वोपरि होना चाहिए।

# आचार्य भिक्षु के 222वें चरमोत्सव पर विविध कार्यक्रम

## फरीदाबाद

222वें भिक्षु चरमोत्सव के अवसर पर अभातेयुप निर्देशित अभ्यर्थना के अंतर्गत तेयुप फरीदाबाद द्वारा भिक्षु भजन मंडली के सहयोग से भिक्षु भजन संध्या का आयोजन तेरापंथ भवन के प्रांगण में हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के समुच्चारण से हुआ, तत्पश्चात भिक्षु भजन मंडली के संयोजक चैनरूप तातेड़, तेजरत्न जैन आदि द्वारा भिक्षु भक्ति में सुमधुर गीतों की प्रस्तुति दी गई। दूसरे चरण में स्नेहा दुगड़, मनस्वी सेठिया, अंकिता दुगड़ ने अपनी स्वर लहरी से सबको मंत्र मुग्ध कर दिया। बबिता धारीवाल, वंदना बैद, संजीव बैद, चंदा भंसाली, राजेश बैद, विजय नाहटा, नरेंद्र घोषल आदि ने भी अपनी प्रस्तुति दी। तेयुप अध्यक्ष विनीत बैद ने सभी का आभार ज्ञापन किया। अभातेयुप निर्देशित अखंड जप में भी तेयुप एवं किशोर मंडल साथियों ने सहभागिता दर्ज कराई।

## गुवाहाटी

मुनि प्रशांत कुमारजी के सान्निध्य में 222वां भिक्षु चरमोत्सव मनाया गया। जनसभा को संबोधित करते हुए मुनि प्रशांत कुमारजी ने कहा- आचार्य भिक्षु महान सत्य शोधक आचार्य थे। शुद्ध साधुत्व का पालन करना और जनता को भी धर्म का शुद्ध स्वरूप बतलाना उनका ध्येय था। अपने समय में धर्म के बारे में चल रही भ्रांतियों और मिथ्या मान्यताओं का उन्होंने खुलकर प्रतिकार किया, जिसे तत्कालीन धार्मिक लोग सहन नहीं कर सके।

आचार्य भिक्षु ने बताया- जहां हिंसा है वहां धर्म नहीं हो सकता। भगवान महावीर स्वामी की वाणी के आधार पर ही धर्म का शुद्ध स्वरूप बताया। तेरापंथ संघ का प्रवर्तन कर उन्होंने अनुशासन को सर्वाधिक महत्व दिया और मर्यादा, व्यवस्था, संगठन का निर्माण किया, आचरण और अनुशासन की नींव से तेरापंथ को खड़ा किया।

मुनि कुमुद कुमारजी ने कहा- आचार्य श्री भिक्षु ने सत्य के लिए बहुत तप तपा। उन्हें सत्य के लिए मरना भी मंजूर था। उन्होंने शुद्ध साधना का पथ अपनाया लेकिन विरोध से कभी डरे नहीं। उनका चिंतना था कि धार्मिकता व्यक्ति के व्यवहार में भी होनी चाहिए। सत्य को यथार्थ रूप में स्वीकार करने वाला ही धार्मिक जीवन जी सकता है। तेरापंथी सभा, तेयुप मंत्री पंकज सेठिया, अणुव्रत समिति उपाध्यक्ष नवरतन गधैया, महासभा उपाध्यक्ष विजय कुमार चोपड़ा ने गीत एवं वक्तव्य के द्वारा भावांजलि अर्पित की। संघगान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। आभार ज्ञापन सभा के वरिष्ठ सहमंत्री राकेश जैन किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि कुमुद कुमार जी ने किया। सायंकाल में धम्म जागरणा का भी आयोजन किया गया।

## दक्षिण, मुंबई

आराधना आराध्य की - भिक्षु भक्ति क्रार्यक्रम का शुभारंभ मुनि कुलदीप कुमार जी के नमस्कार महामंत्र से हुआ। कार्यक्रम में कांकरोली से समागत सुर स्वर संगम ने सुमुधर भिक्षु गीतों की प्रस्तुति दी। गायक हिम्मत सिंह बाबेल, विनोद बोहरा, ललित बापना, दीपक चोरड़िया, सुनील कोठारी ने सभी को भक्ति में सराबोर किया। मुनि कुलदीप कुमार जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु को समझने का प्रयास करें। उन्होंने महावीर की वाणी को पुनः जीवंत करने का प्रयास किया। स्वामीजी के दर्शन को अपने जीवन में उतारें एवं अपनी आत्मा का कल्याण करें। मुनि मुकुलकुमार जी ने गीत की प्रस्तुति देते हुए कहा कि आचार्य भिक्षु हमारी शक्ति है, गौरव है, हमारा मार्गदर्शन है, हमारे जीवन की अक्षय धड़कन है। आचार्य भिक्षु से उनकी सत्य निष्ठा को समझें, सत्य ही उनकी आत्मा थी। आत्मा ही उनका सत्य था। कार्यक्रम में तेरापंथ फ्रोफेशनल फोरम के राष्ट्रीय महामंत्री मनीष कोठारी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष नवीन चोरड़िया, मुंबई ज़ोन अध्यक्ष कमल मेहता, पदाधिकारी, अणुव्रत महासमिति से विनोद कोठारी, महासभा राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य, अभातेयुप कार्यकारणी सदस्य आदि उपस्थित थे। स्वागत वक्तव्य सभा अध्यक्ष सुरेश डागलिया ने किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में आचार्य महाप्रज्ञ विद्या निधि फाउंडेशन के अध्यक्ष कुन्दनमल धाकड़, पदाधिकारी एवं कार्यकर्ताओं आदि का सहयोग प्राप्त हुआ। कार्यक्रम के संयोजक अशोक धींग, सुखलाल सियाल, लतिका डागलिया, मिखील डागलिया ने अथक परिश्रम कर कार्यक्रम का सफल बनाया। कार्यक्रम का कुशल संचालन सभा मंत्री दिनेश धाकड़ ने किया। आभार युवक परिषद के अध्यक्ष गिरीश सिसोदिया ने किया।

## राजाजीनगर

222वें भिक्षु चरमोत्सव एवं अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के गौरवशाली 60 साल की पूर्णाहुति पर अभातेयुप द्वारा निर्देशित "अभ्यर्थना एक क्रांति की" के अंतर्गत तप एवं जप सहित सामायिक में तेरापंथ युवक परिषद राजाजीनगर द्वारा 24 घण्टे का अखण्ड जप का आयोजन स्थानीय तेरापंथ भवन राजाजीनगर में किया गया। स्थानीय श्रावक-श्राविका समाज ने आराध्य के प्रति अभ्यर्थना व्यक्त करते हुए जप सहित सामायिक में अपनी सहभागिता दर्ज कराई। अखण्ड जाप में कुल 81 सदस्यों की रही उपस्थिति जिसमें परिषद एवं किशोर मंडल से 63 सदस्यों ने उपवास एवं एकासन का प्रत्याख्यान कर जप सहित सामायिक में भाग लिया। रात्रिकालीन धम्म जागरण का आयोजन भी तेरापंथ भवन में समायोजित किया गया।

## माधावरम्, चेन्नई

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ माधावरम ट्रस्ट एवं तेरापंथ युवक परिषद् चेन्नई के सयुंक्त तत्वावधान में आचार्य श्री भिक्षु के 222वें चरमोत्सव पर 'एक शाम भिक्षु के नाम' विशाल धम्मजागरण का आयोजन आचार्य महाश्रमण तेरापंथ जैन पब्लिक स्कूल में किया गया। अर्हत् वन्दना, नमस्कार महामंत्र से प्रारंभ धम्मजागरणा में ट्रस्ट बोर्ड प्रबंधन्यासी घीसुलाल बोहरा ने पधारे हुए सभी गायक कलाकारों, श्रावक समाज का स्वागत-अभिनन्दन किया। साध्वी डॉ. गवेषणाश्री जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु एक कुशल विधिवेत्ता के साथ-साथ एक सहज कवि एवं महान साहित्यकार थे। वे जब तक जिये, ज्योति बनकर जिये। उनके जीवन का हर पृष्ठ, पुरुषार्थ की गौरवमयी गाथाओं से भरा पड़ा है। सभी संगीत कलाकारों को प्रेरित करते हुए साध्वीश्री जी ने कहा कि स्वर का अभ्यास भी साधना है। प्रत्येक हाथी के सिर पर गजमुक्ता मणी नहीं होती या प्रत्येक वन में चंदन के पेड़ नहीं होते, वैसे ही स्वर का गिफ्ट हर कोई को प्राप्त नहीं होता। साध्वी मयंकप्रभाजी ने कहा कि आचार्य भिक्षु का उदय एक नए आलोक की सृष्टि थी। उनका जीवन अनेक विशिष्टताओं का पुंज था।

साध्वी मेरुप्रभाजी ने 'तेरस का मेला सुहाना' सुमधुर गीतिका प्रस्तुत की। साध्वी दक्षप्रभाजी ने भी गीत का संगान किया। विराट धम्म जागरणा कार्यक्रम में बेंगलोर से समागत देवीलाल पितलिया, तिरुपुर से ऋषभ आंचलिया, मंड्या से ऋतु दक ने सुंदर प्रस्तुतियों से समां बांधा। धम्म जागरणा के प्रायोजक रमेश, जितेन्द्र, ह्रदान, ध्यान आंचलिया परिवार एवं गायक कलाकारों का ट्रस्ट बोर्ड की ओर से अभिनन्दन किया गया। कार्यक्रम का कुशल संचालन राकेश खटेड ने एवं धन्यवाद ज्ञापन प्रवीण सुराणा ने दिया।

## बेंगलुरु

222वें भिक्षु चरमोत्सव पर साध्वी उदितयशा जी ने आह्वान किया कि हम केवल भिक्षु के गुणगान ही नहीं करें, उनके सिद्धांतों व दर्शन को जानने का व जीवन में उतारने का प्रयत्न करेंगे तभी भिक्षु हम से प्रसन्न होंगे। जो भिक्षु को पसंद नहीं था वह कार्य हम नहीं करें। उन्होंने सत्य की राह पर चलकर कष्ठों का सामना किया, जो कठिनाइयां झेली उसके अनुयायी उनके बलिदान की महत्ता को समझें।

साध्वी संगीतप्रभा जी ने कहा भिक्षु की परंपरा को सुरक्षित रखना हमारा दायित्व है हम प्रलोभनों व आडंबरों के द्वारा भिक्षु को नहीं प्राप्त कर सकते। दूध-दूध में फर्क होता है, सफेदी उनकी समानता का पैमाना नहीं है। हम कहीं भी जाएं, कुछ भी करें, हमारे संघ की परंपरा, मान्यता को नहीं भूलें।

साध्वी भव्ययशा जी ने कहा आचार्य भिक्षु की पसंद हमारी पसंद बने, परस्पर प्रीति-सौहार्द भाव के द्वारा हम आपसी संबंधों को मजबूत बनाएं। साध्वी भव्ययशाजी एवं शिक्षाप्रभा जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। सभा मंत्री विनोद छाजेड़ ने आचार्य भिक्षु के प्रति अपनी भावना अभिव्यक्त की। अभातेयुप निर्देशानुसार 'अभ्यर्थना आराध्य की' के अंतर्गत तेरापंथ युवक परिषद् बेंगलुरु ने 'ॐ भिक्षु-जय भिक्षु' का चौबीस घंटे के अखंड जप अनुष्ठान का सानंद आयोजन किया। इस पावन अवसर पर सामायिक, जप और तप की सामूहिक आहूति में तेयुप सदस्यों के साथ 180 से अधिक श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लेकर अपनी आस्था का परिचय दिया। विशेष रूप से, युवा और किशोर साथियों ने उपवास और एकासन का प्रत्याख्यान करते हुए तप और त्याग की भावना को सशक्त रूप में प्रस्तुत किया। 'एक शाम भिक्षु के नाम' का आयोजन साध्वी उदितयशाजी के सान्निध्य में किया गया। साध्वी उदितयशाजी ने अपने मधुर स्वर में भक्ति गीत प्रस्तुत किए, वहीं साध्वी संगीतप्रभाजी ने अपनी गीतिकाओं से उपस्थित श्रद्धालुओं को भक्ति रस में सराबोर कर दिया। भजन संध्या में तेयुप की भजन मंडली प्रज्ञा संगीत सुधा, तेरापंथ महिला मंडल की श्रद्धा संगीत सुधा और स्थानीय गायक-गायिकाओं ने भी अपने आराध्य आचार्य भिक्षु के प्रति अपनी श्रद्धा और भक्ति को गीतों के माध्यम से अभिव्यक्त किया। इस विशेष अवसर पर अनुष्ठान के संयोजक प्रकाश सालेचा और तप संयोजक मनोज पोखरणा का विशेष योगदान रहा। धम्ममजागरण का संचालन तेयुप के सह मंत्री प्रतीक जोगड़ ने कुशलतापूर्वक किया।

## अहमदाबाद पश्चिम

साध्वी मधुस्मिताजी के सान्निध्य में पश्चिम अहमदाबाद तेरापन्थ भवन में प्रथम बार विशाल रूप में आचार्य भिक्षु चरमोत्सव एवम् धम्म जागरण का कार्यक्रम मनाया गया। साध्वीश्री के नमस्कार महामंत्र के द्वारा आज के कार्यक्रम का शुभारंभ किया। साध्वीश्री ने कहा- आचार्य भिक्षु ने ज्योतिर्मय, मनोवैज्ञानिक जीवन जिया। आचार्य भिक्षु सबके लिए संसार समुद्र के तारक बने। साध्वीश्री ने आगे कहा कि ज्योतिर्मय जीवन जीना कला है तो ज्योतिर्मय मरण महाकला है। अंतिम समय में आपने हर दोष की आत्मलोचना की। आपने सबको निरतिचार संयम पालने की शिक्षा प्रदान की। चरमोत्सव के अवसर पर अनेकों भाई बहनों ने उपवास एवं पौषध की आराधना की। साध्वी सहजयशा जी ने कहा आचार्य भिक्षु को खाने में जहर एवं रहने के लिए यक्ष चैत्यालय मिला। लोगों के दिए गए कष्ट उनके लिए राजमार्ग बन गए, बड़ी समता से उन्होंने सभी कष्टों को सहन किया। साध्वी प्रदीपप्रज्ञाजी ने संचालन किया। मुक्ता महनोत ने भिक्षु अष्टकम एवं गीत के द्वारा मंगलाचरण किया। दक्षा दक, राजेंद्र बोथरा, उपासिका विनोदबाला डागा, युवा गौरव डॉ. धवल डोशी ने आचार्य भिक्षु की अभिवन्दना में अपनी प्रस्तुति दी। सांयकाल विराट रूप में धम्म जागरण का कार्यक्रम चला। सभा अध्यक्ष सुरेश दक ने सबका आभार व्यक्त किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
14 अक्टूबर-20 अक्टूबर, 2024

# आचार्य भिक्षु के 222वें चरमोत्सव पर विविध कार्यक्रम

## मण्डिया

साध्वी संयमलताजी के सान्निध्य में 222वां भिक्षु चरमोत्सव का आयोजन स्थानीय तेरापंथ भवन मण्डिया में किया गया। मंगलाचरण में साध्वी वृंद ने गीत की प्रस्तुति दी। साध्वी मार्दवश्री जी ने भिक्षु भक्तों को सम्बोधित करते हुए कहा- तेरापंथ धर्मसंघ आचार्य भिक्षु के हिमालयी संकल्प की फलश्रुति है। आचार्य भिक्षु की तपस्या रूपी खाद ने संघ की धरती को उर्वर बनाया और पुरुषार्थ रूपी पानी का सिंचन पाकर फसल लहलहा उठी। साध्वी रौनकप्रभाजी ने कहा आचार्य भिक्षु भीतरी ज्योति तक पहुंच गए, वे स्वयं ज्योतिर्मय बन गए। रात्रिकालीन धम्म जागरणा में श्रावक भक्तिरस से सराबोर होकर भिक्षुमय बन गए।

## उदयपुर

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद उदयपुर द्वारा 222वां भिक्षु चरमोत्सव 'शासन गौरव' मुनि सुरेशकुमार जी के सान्निध्य में मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत मुनिश्री के द्वारा नवकार मंत्र के साथ हुई। इस अवसर पर कुसुम पोरवाल, यशिका राठौर, सिंघवी सिस्टर्स, रवि बोहरा, बोहरा सिस्टर्स, पंकज भंडारी, कमल नाहटा आदि गायकों ने अपनी सुमधुर प्रस्तुतियां दी। तेयुप साथियों द्वारा 'हमारे भाग्य बड़े बलवान' गीत की प्रस्तुति दी गई। स्वागत उद्बोधन तेयुप अध्यक्ष भूपेश ख़मेसरा ने किया। आभार सहमंत्री विनीत फ़ुलफ़गर ने एवं मंच संचालन तेयुप उपाध्यक्ष अशोक चोरडिया ने किया। अभातेयुप द्वारा अभ्यर्थना के क्रम में निर्देशित अखंड जप अनुष्ठान के क्रम में तेरापंथ युवक परिषद उदयपुर द्वारा 6:30 घंटे का जप अनुष्ठान आयोजित किया गया, जिसमें 45 युवकों ने भाग लिया।

## अमराईवाड़ी ओढव

तेरापंथ युवक परिषद, अमराईवाड़ी-ओढव द्वारा 222वें आचार्य भिक्षु चरमोत्सव के उपलक्ष में 'एक शाम भिक्षु के नाम' भक्ति संध्या का समायोजन साध्वी काव्यलताजी के सान्निध्य में सिंघवी भवन में किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ साध्वीश्री ने नमस्कार महामंत्र से किया। साध्वी ज्योतियशा जी, साध्वी सुरभिप्रभाजी ने मन भावक गीतों से जन-जन को भाव विभोर कर दिया। भैरुलाल मेहता, उपासिका सेजल मांडोत, तेयुप अध्यक्ष मुकेश सिंघवी, सन्तोषदेवी चिप्पड़, सुधा बाफना, विपुल मांडोत, मंजू बोथरा, काजल कुकड़ा एवं रीना सोलंकी ने भावपूर्ण गीतों की प्रस्तुति दी। महिला मंडल अध्यक्षा लक्ष्मी सिसोदिया, संगीता सिंघवी, प्रकाश बाफना, अशोक जैन, पूजा बाफना, सुशीला बाफना ने भी अपनी भावांजलि अर्पित की। कार्यक्रम का संचालन जयेश सिंघवी ने किया। तेयुप द्वारा 'अभ्यर्थना एक क्रांति की' कार्यक्रम के अंतर्गत 'ओम भिक्षु जय भिक्षु जाप' के साथ सामायिक का आयोजन भी किया गया जिसमें लगभग 40 सदस्यों ने भाग लिया। कार्यक्रम के संयोजक विपुल मांडोत एवं हेमंत पगारिया का विशेष श्रम रहा।

## फारबिसगंज

स्थानीय तेरापंथ भवन में साध्वी स्वर्णरेखाजी के सान्निध्य में 222वां भिक्षु चरमोत्सव मनाया गया। साध्वीश्री ने अपने प्रवचन में कहा कि आचार्य भिक्षु अनेकों संघर्षों को झेलते हुए खुद कंटीली राहों पर चले, शुरुआती 5 वर्ष तक उन्हें रोटी पानी भी सही तरीके से नहीं मिल पाया, लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी। जिसके फलस्वरुप आज हम इतने सुंदर, सुरम्य, नंदनवन जैसे भैक्षव शासन में धर्माराधना कर रहे हैं। एक सूर्य वह है जो अस्त होने के बाद अंधकार फैलाता है लेकिन आचार्य भिक्षु एक ऐसे महासूर्य थे जिनके महाप्रयाण के बाद भी विश्व उनके आचार, विचार और मर्यादा से तेरापंथ धर्मसंघ के आलोक में प्रकाशित हो रहा है। आचार्य श्री भिक्षु में श्रुत, शील और बुद्धि की संपन्नता के साथ आचार संपन्नता भी थी। आज हम सभी उनके गुणों को याद करते हुए तेरापंथ धर्मसंघ की प्रभावना में सहयोग करते रहें और धर्म संघ को नई ऊंचाइयां देते हुए आगे बढ़ाते रहें। चरमोत्सव के उपलक्ष्य में 13 श्रावक-श्राविकाओं के द्वारा भिक्षु स्वामी की अभ्यर्थना में गीतिकाओं के द्वारा अपने श्रद्धा भाव समर्पित किए। रात्रिकालीन कार्यक्रम में धम्मजागरण का कार्यक्रम रखा गया, जिसमें युवक-युवतियों एवं बच्चों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने उपवास, एकासन तथा अन्य प्रत्याख्यान के द्वारा इस दिवस को मनाया। तेरापंथ भवन में जप अनुष्ठान का जिसमें काफी संख्या में महिला मंडल, कन्या मंडल, ज्ञानशाला के बच्चों आदि ने अपनी सहभागिता दर्ज करवाई।

## लिलुआ

अभातेयुप के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद्, लिलुआ द्वारा 222वें भिक्षु चरमोत्सव के उपलक्ष पर 'ॐ भिक्षु जय भिक्षु' का 24 घंटे का अखण्ड जाप और सामयिक का आयोजन तेरापंथ भवन, लिलुआ में किया गया। युवा शक्ति सहित सभा, महिला मंडल एवं सकल श्रावक समाज ने जाप में अपनी सहभागिता दर्ज करवाई। 24 घंटे जाप और सामयिक के अन्तर्गत कुल 154 सामयिक की गई। तेरापंथ युवक परिषद् लिलुआ के अध्यक्ष अमित बांठिया और मंत्री जयंत घोड़ावत ने कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु सभी के प्रति आभार ज्ञापित किया।

## इस्लामपुर

आचार्य श्री भिक्षु के 222वें चरमोत्सव के अवसर पर अभातेयुप के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा आयोजित 'अभ्यर्थना एक क्रांति की' के अंतर्गत युवकों एवं किशोरों द्वारा स्थानीय तेरापंथ भवन में जप एवं सामायिक का आयोजन किया गया। तप के क्षेत्र में संपूर्ण श्रावक समाज सहित युवकों एवं किशोरों द्वारा भी उपवास, एकासन एवं रात्रि भोजन त्याग किया गया। भिक्षु भक्ति संध्या में भी संपूर्ण श्रावक समाज के सहभागिता रही। सभा अध्यक्ष कन्हैयालाल बोथरा, तेयुप मंत्री मुदित पींचा एवं महिला मण्डल मंत्री ममता बोथरा ने गीत के माध्यम से अभिव्यक्ति दी।

## साउथ हावडा

मुनि जिनेशकुमार जी के सान्निध्य में 222वें भिक्षु चरमोत्सव पर 'एक शाम भिक्षु के नाम' धम्मजागरण का आयोजन प्रेक्षा विहार में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा एवं तेरापंथ युवक परिषद् दक्षिण हावड़ा द्वारा किया गया। तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, साउथ हावड़ा व तेयुप दक्षिण कोलकाता सहयोगी संस्था के रूप में थे। धम्मजागरण के मुख्य संगायक जागृत कोठारी थे। इस अवसर पर उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए मुनिश्री ने कहा - आचार्य श्री भिक्षु तेरापंथ धर्म संघ के प्राण देवता थे, संस्थापक व प्रवर्तक थे। वे हमारी आस्था के केन्द्र हैं। उनका जीवन हमारे लिए आदर्श है। उनकी सत्यनिष्ठा बेजोड़ थी, उनका जीवन साधना से ओतप्रोत था। उनका सुमिरण करने से भव-भव के संचित कर्म क्षम हो जाते हैं। उनको स्वार्थ से नहीं परमार्थ की दृष्टि से जपना चाहिए। धम्म जागरण में जागृत कोठारी ने मधुर भजनों का संगान किया। मुनिश्री ने कई भिक्षु गीतों का आंशिक संगान भी किया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुनि कुणालकुमार जी के सुमधुर भिक्षु भक्ति गीत के संगान से हुआ। स्वागत भाषण सभा के उपाध्यक्ष बजरंग डागा व तेयुप उपाध्यक्ष विक्रम भंडारी ने दिया। तेयुप साउथ हावड़ा की महाश्रमण भजन मंडली व तेयुप साउथ कोलकाता की भजन मंडली ने सुमधुर भजनों की प्रस्तुति दी। आभार ज्ञापन संगठन मंत्री सुनित नाहटा ने व संचालन पारस बरडिया ने किया। तेयुप एवं सभा द्वारा मुख्य संगायक जागृत कोठारी का सम्मान किया गया।

## रायपुर

222वें भिक्षु चरमोत्सव के अवसर पर तेरापंथ युवक परिषद्, रायपुर द्वारा अभातेयुप के निर्देशन में जप-तप के साथ ही धम्म जागरण का भी समायोजन किया गया। तेयुप, रायपुर के सदस्यों द्वारा सामूहिक उपवास व एकासन का प्रत्याखान मुनि सुधाकर जी व मुनि नरेश कुमार जी के सान्निध्य में किया गया। सायं 7 बजे से 'ऊं भिक्षु जय भिक्षु' जाप में तेयुप रायपुर द्वारा अभातेयुप आयोजित अखंड जाप में सहभागिता दी गई। रात्रि में 'एक शाम भिक्षु के नाम' धम्म जागरण का आयोजन किया गया, जिसमें 5 सामूहिक व 15 एकल प्रस्तुतियां हुई। सभी सहभागियों को तेयुप द्वारा पुरस्कृत किया गया।

## अहमदाबाद

तेरापंथ के आद्यप्रवर्तक आचार्य श्री भिक्षु का 222वां चरमोत्सव तेरापंथी सभा, अहमदाबाद के तत्वावधान में मुनि मुनिसुव्रतकुमारजी, मुनि डॉ. मदनकुमारजी एवं 'शासनश्री' साध्वी सरस्वतीजी आदि ठाणा के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, शाहीबाग में आयोजित किया गया। मुनि मुनिसुव्रतकुमारजी ने धर्मसभा को संबोधित करने के साथ सुमधुर गीतिका के माध्यम से आचार्य श्री भिक्षु के प्रति अपनी भावना प्रकट करते हुए कहा आचार्य भिक्षु आत्मस्थ थे। सिरियारी समाधि स्थल पर लोग निश्चित ही मानसिक समाधि को प्राप्त करते हैं। इस अवसर मुनिश्री ने अनेक श्रावक-श्राविकाओं को उपवास व अन्य प्रत्याख्यान करवाए। मुनि डॉ. मदनकुमारजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि आचार्य भिक्षु एक सत्य सोधक-समीक्षक थे, पुरुष परीक्षक थे, महातपस्वी संत थे। मानो आचार्य भिक्षु ने पांचवें आरे में चौथा आरा प्रस्तुत कर दिया व अहिंसा की सुक्ष्म व्याख्या करते हुए मिथ्या अवधारणा को दूर किया। मुनि शुभमकुमारजी ने आचार्य भिक्षु के प्रति श्रद्धाभक्ति, अभिवंदना व्यक्त करते हुए कहा वैचारिक पवित्रता, सत्य और सांस्कृतिक मूल्यों की सुरक्षा के लिए आचार्य भिक्षु ने क्रान्ति की और तेरापंथ की स्थापना की। साध्वी संवेगप्रभाजी ने मुक्तक के साथ आचार्य भिक्षु के जीवन का संक्षिप्त विवरण देते हुए अनेक घटना प्रसंगों का उल्लेख कर साध्वी सरस्वतीजी द्वारा रचित गीतिका का संगान करते हुए अपने भावों की प्रस्तुति दी। साध्वी नंदिताश्रीजी, साध्वी तरुणप्रभाजी व साध्वीपरमार्थप्रभाजी ने आचार्य भिक्षु के जीवन दर्पण को उजागर करते हुए उनके अनुशासन, समर्पण, श्रद्धा, मर्यादा आदि गुणों को व्याख्यायित करते हुए सुंदर शाब्दिक चित्रण प्रस्तुत किया। सभा अध्यक्ष अर्जुनलाल बाफना, महिला मंडल अध्यक्ष हेमलता परमार ने आचार्य भिक्षु को अपनी श्रद्धाभक्ति, अभिवंदना व श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए आवश्यक सूचनाओं की जानकारी दी।

## रायसिंहनगर

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा रायसिंहनगर के तत्वावधान में आचार्य भिक्षु चरमोत्सव पर धम्म जागरण का आयोजन स्थानीय जैन तेरापंथ भवन में सम्पन्न किया गया। कार्यक्रम में रायसिंहनगर सभा के उपाध्यक्ष राजकुमार जैन, TPF अध्यक्ष डॉ. मुकेश जैन, तेरापंथ महिला मंडल सदस्या सुमन जैन, स्थानीय तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष CA अभिषेक जैन, सभी संस्थाओं के पदाधिकारी एवं सदस्य उपस्थित थे। उपस्थित श्रावक समाज ने आचार्य श्री भिक्षु को भजनों के माध्यम से भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

## गुवाहाटी

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के निर्देशन में 222वें भिक्षु चरमोत्सव के उपलक्ष में अभ्यर्थना एक क्रांति की के अंतर्गत तेरापंथ युवक परिषद्, गुवाहाटी द्वारा 24 घण्टे का अखंड जप अनुष्ठान का कार्यक्रम स्थानीय तेरापंथ धर्म स्थल में आयोजित किया गया। जप कार्यक्रम में 166 सामायिक हुई। इस कार्यक्रम के संयोजक रवि बुच्चा एवं पंकज सिपानी थे।

## पूर्वांचल स्तरीय युवा सम्मेलन का भव्य आयोजन

# पराक्रम का प्रतीक होता है युवा

**साउथ हावड़ा।**

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा- 3 के सान्निध्य में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के तत्वावधान में पूर्वांचल स्तरीय युवा सम्मेलन का आयोजन प्रेक्षा विहार में तेरापंथ युवक परिषद् साउथ हावड़ा द्वारा किया गया। सम्मेलन में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष रमेश डागा, महामंत्री अमित नाहटा, मुख्य वक्ता कल्याण परिषद के संयोजक के. सी. जैन, मुख्य अतिथि आई.ए.एस. वैभव चैधरी आदि गणमान्य व्यक्ति विशेष रूप से उपस्थित थे। उद्घाटन सत्र में 'संगठन और युवा' विषय पर उपस्थित युवाओं को संबोधित करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा- सामाजिक एवं धार्मिक चेतना के जागरण का एक सशक्त माध्यम है- संगठन। संगठन में शक्ति होती है। शक्ति- शक्ति को आकर्षित करती है। शक्ति व दायित्व बोध के अभाव में अच्छे से अच्छा संगठन भी तिनके की तरह बिखर जाता है। उद्देश्य और दायित्व के साथ चलने वाला छोटे से छोटा संगठन भी आकाशव्यापी ऊँचाईयों को प्राप्त हो सकता है। मुनि श्री ने आगे कहा- युवा स्वर्ग की सच्ची अनुभूति है। युवा समाज का यथार्थ प्रतिबिम्ब है। युवा शक्ति का प्रतीक व ऊर्जा का पुंज है। युवा देश की तकदीर व तस्वीर है। युवा पराक्रम का प्रतीक होता है। वह अपने पुरुषार्थ व पराक्रम के द्वारा असंभव प्रतीत होने वाले कार्य को भी संभव बना देता है। युवा शब्द का अर्थ है वायु की तरह गतिशील होना।

इस अवसर पर मुनि परमानंद जी ने कहा- संगठन में शक्ति होती है। सेवा, संस्कार के कार्य भी तभी हो सकेंगे जब युवा संगठित और एकजुट होंगें। इस अवसर पर मुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। कार्यक्रम उद्घाटन सत्र का प्रारंभ मुनि श्री के नमस्कार महामंत्रोच्चार के साथ हुआ। शाखा परिषदों के अध्यक्ष मंत्रियों द्वारा विजय गीत का संगान किया गया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन कल्याण परिषद् के संयोजक के. सी. जैन ने किया। अ.भा.ते.यु.प. के अध्यक्ष रमेश डागा ने युवा सम्मेलन के उद्घाटन की घोषणा की। स्वागत भाषण तेरापंथ युवक परिषद् साउथ हावड़ा के अध्यक्ष गगनदीप बैद ने किया। साउथ हावड़ा श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के सहमंत्री कपिल धारीवाल ने सभा की ओर से आगंतुकों का स्वागत करते हुए विचार-व्यक्त किये। राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा ने सेवा, संस्कार व संगठन के बारे में जानकारी देते हुए संगठित रहते हुए संस्था के प्रति समर्पित रहकर कार्य करने का आहवान किया। मुख्य वक्ता कल्याण परिषद के संयोजक के. सी. जैन ने युवाओं को प्रकृति के नियमों व श्वास के प्रति जागरूक रहकर धर्मसंघ की सेवा करने की बात कही। मुख्य अतिथि I.A.S. वैभव चौधरी ने कहा- युवापीढ़ी अपने जीवन में धर्म एवं संघ को सुदृढ़ करें। सभी एकजुट होकर एक दूसरे को सहयोग करें। ते.यु.प. एवं किशोर मंडल के सदस्यों ने सुमधुर गीत का संगान किया। अतिथियों एवं प्रायोजको का ते.यु.प. द्वारा सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद जी व मंत्री अमित बैगवानी ने किया।

द्वितीय सत्र - संकल्प सत्र (हमारा संकल्प हमारे आयाम) में राष्ट्रीय अध्यक्ष ने अपने वक्तव्य में कहा कि पूर्वांचल की सभी परिषदें अधिक सक्रियता के साथ कार्य कर रही हैं। आचार्य तुलसी की दूरगामी सोच थी कि युवा कुछ भी कार्य कर सकता है। इस संस्था में कार्यकर्ताओं का निर्माण होता है। युवक परिषद एक मात्र संस्था है जिसके पास तीस आयाम है। अभातेयुप के पूर्व अध्यक्ष रतन लाल दुगड़ ने बताया कि जब परिषद का निर्माण हुआ तब आचार्य तुलसी से पूछा गया- गुरुदेव हम क्या करें? क्योंकि उस समय कोई कार्य करने को नहीं था और आज कहा जाता है कि हम क्या-क्या करें? अभातेयुप संचेतक अनंत बागरेचा, अभातेयुप सदस्य विकास बोथरा, सुमित छाजेड़, दीप पुगलिया, जय चोरड़िया, राजीव बोथरा, सूर्यप्रकाश डागा ने आयामों के विषय में जानकारी प्रदान की।

अभातेयुप महामंत्री अमित नाहटा ने कहा की हमारा युवक परिषद से जुड़ने का लक्ष्य है कि हम अपने जीवन को और अच्छा कैसे बना सकें। हमारे अंदर वक्तृत्व कला का विकास हो। वर्तमान में फास्ट मनी का चलन आया है, जिससे हमारे युवकों को बचना चाहिए। महामंत्री ने नशामुक्ति, व्यापार, परिवार, स्वास्थ्य आदि विषयों पर प्रकाश डाला। तृतीय सत्र - ऊर्जा सत्र में परिषद के उपाध्यक्ष विक्रम भंडारी ने मुख्य वक्ता का स्वागत किया एवं अपने उदगार व्यक्त किये। मुख्य वक्ता Life Coach विक्रम सेठिया ने कहा जीवन में हम जो भी पाते हैं वो धर्म से ही प्राप्त होता है। विक्रम ने युवाओं में जोश एवं ऊर्जा का संचार किया। उपस्थित सभी परिषदों का सम्मान किया गया। आभार ज्ञापन सहमंत्री राहुल दुगड़ ने किया एवं संचालन मंत्री अमित बेगवानी ने किया। सम्मेलन को सफल बनाने में उपाध्यक्ष एवं संयोजक विक्रम भंडारी सह संयोजक भानु प्रताप चोरड़िया सहित सम्पूर्ण प्रबंध समिति एवं कार्यसमिति सदस्यों का विशेष श्रम रहा। युवा सम्मेलन में साउथ हावड़ा, उत्तर कलकत्ता, लिलुआ, साउथ कलकत्ता, पूर्वांचल कोलकाता, हिन्दमोटर, कोलकाता मेन, उत्तर हावड़ा, सेंथिया, मुर्शिदाबाद, इस्लामपुर और दिनहट्टा की शाखा परिषदों ने सहभागिता दर्ज की। सम्मेलन में लगभग 200 युवक सहभागी बनें। सम्मेलन प्रारंभ होने से पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं महामंत्री ने युवा साथियों की उपस्थिति में ध्वजारोहण किया।

# अच्छी आदत से होता है सद्भाग्य का निर्माण

**रायपुर।**

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, रायपुर द्वारा 'गुड लाईफ गुड लक' विषय पर भव्य सेमिनार का आयोजन रायपुर स्थित श्री लाल गंगा पटवा भवन, टैगोर नगर में मुनि सुधाकर कुमार जी के सान्निध्य में किया गया। लगभग ढाई घंटे चले सेमिनार में मुनि सुधाकरजी ने अपनी छोटी-छोटी आदतों से नवग्रह को अनुकूल बनाने की जानकारी प्रदान की।

मुख्य अतिथि छत्तीसगढ़ के राज्यपाल रमन डेका ने पूर्व में आचार्य श्री महाश्रमण जी के विभिन्न क्षेत्रों में किए हुए दर्शन का उल्लेख करते हुए कहा कि मैं जल्द ही सूरत में आचार्य श्री के दर्शन करुंगा।

राज्यपाल महोदय ने कहा कि मुनिश्री ने जो छोटी-छोटी बातें हमे बतलाई है उसे जीवन में उतारने का हमें लक्ष्य रखना चाहिए। सेमिनार का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से किया गया। मुनि सुधाकर जी ने अष्ट कर्मों व नवग्रहों का तुलनात्मक संबंध बताते हुए आगे कहा कि कर्म हो या ग्रह जिम्मेदार व्यक्ति स्वयं होता है। अपने उत्थान, पतन, सुख-दुःख का कारण भी व्यक्ति स्वयं होता है।

व्यक्ति की क्रिया ही कर्म व ग्रह के परिणाम के रूप में फल देती है किंतु हर व्यक्ति में वह शक्ति और सामर्थ्य होता है कि वह अपने किए हुए फलों में भी शुभ व अशुभ परिवर्तन कर सकता है।

मुनि नरेश कुमार जी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में स्वागत वक्तव्य अध्यक्ष तरुण नाहर ने एवं आभार मंत्री अरुण सिपानी ने दिया। मार्वल टी के मैनेजिंग डायरेक्टर प्रवीण जैन विशेष अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए। श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ युवक परिषद्, अणुव्रत समिति सहित सभी संस्थाओं की गरिमामय उपस्थिति रही।

# त्रि-दिवसीय तेरापंथ हस्तकला उत्सव का आयोजन

**सूरत।**

तेरापंथ युवक परिषद सूरत एवं तेरापंथ किशोर मंडल सूरत द्वारा त्रि-दिवसीय तेरापंथ हस्तकला उत्सव का आयोजन आचार्य श्री महाश्रमण चातुर्मास व्यवस्था समिति सूरत के तत्वावधान में किया गया।

तेरापंथ हस्तकला उत्सव का अवलोकन करने हेतु पूज्यप्रवर एवं साध्वी प्रमुखाजी का भी पदार्पण हुआ। सूरत के डिप्टी मेयर नरेन्द्र पाटिल एवं सूरत DCP विजय गुर्जर ने उत्सव का उद्घाटन किया। इस दौरान चातुर्मास व्यवस्था समिति-सूरत के अध्यक्ष संजय सुराणा एवं महामंत्री नानालाल राठौड़ की उपस्थिति रही। तेरापंथ धर्मसंघ के साधु-साध्वियों द्वारा निर्मित हस्त शिल्प की विशाल कला प्रदर्शनी देखने का सुअवसर का लाभ प्रथम दिवस में ही लगभग 3500 से अधिक दर्शकों ने उठाया।

द्वितीय एवं तृतीय दिवस में भी हजारों लोगों ने हस्तकला प्रदर्शनी को देखकर चारित्र आत्माओं के प्रति कृतज्ञता के भाव ज्ञापित किये।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
14 अक्टूबर-20 अक्टूबर, 2024
हे प्रभो! यह तेरापंथ

# तेममं द्वारा चित्त समाधि शिविर कार्यशाला का आयोजन

**नाथद्वारा।**

तेरापंथ महिला मंडल द्वारा चित्त समाधि शिविर कार्यशाला साध्वी मंजूयशा जी ठाणा-4 के सान्निध्य में आयोजित हुई। कार्यक्रम का प्रारंभ साध्वीश्री ने नमस्कार महामंत्र के मंगल उच्चारण से किया। मंडल की बहनों ने सामूहिक गीत प्रस्तुत किया। तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्षा मंजू पोरवाल ने कार्यशाला में संभागी भाई-बहनों का हार्दिक स्वागत किया।

साध्वीश्री ने अर्हम् ध्वनि का जाप, नौ मंगल भावना का सामूहिक उच्चारण एवं प्रेक्षाध्यान का प्रयोग करवाया। साध्वीश्री ने अपने उद्बोधन में कहा 'स्वस्थ परिवार स्वस्थ समाज योजना' के अंतर्गत चित्त समाधि कार्यशाला रखी गई है। चित समाधि का अर्थ है- चित्त की निर्मलता। घर, परिवार, समाज या समूह, व्यक्ति जहां भी रहे मानसिक प्रसन्नता को प्राप्त करना चाहता है। नौ मंगल भावना चित्त समाधि में बहुत सहयोगी होती है। हर कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए वीरता, गंभीरता का होना जरूरी है। चित्त में आनंद, समाधि व शक्ति पाने के लिए प्रेम, सौहार्द, प्रमोद भावना, स्वार्थ का त्याग, अनेकांत दर्शन को अपनाना होगा। अनुकूल-प्रतिकूल स्थिति आने पर भी संतुलन रहेगा तो व्यक्ति को जीवन में सदा शांति, आनंद एवं समाधि प्राप्त होगी। साध्वी चिन्मयप्रभा जी, साध्वी इंदुप्रभा जी ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। साध्वी मानसप्रभा जी ने प्रेरणादायक गीत प्रस्तुत किया।

# प्रश्न मंच प्रतियोगिता का आयोजन

**गांधीनगर।** तेरापंथ सभा गांधीनगर बेंगलुरु के तत्वावधान में साध्वी उदितयशाजी के सान्निध्य में ज्ञानशाला प्रशिक्षक बहनों के लिए ज्ञानवर्धक प्रश्न मंच प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। सम्पूर्ण बेंगलुरु की ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं में से 45 बहनों ने उत्साह पूर्वक प्रश्न मंच में भाग लिया। साध्वी संगीतप्रभाजी ने कहा ज्ञानवर्धक प्रतियोगिता के माध्यम से ज्ञान का विकास होता है। साध्वी भव्ययशाजी, साध्वी शिक्षाप्रभाजी ने अपने विचार व्यक्त किये। प्रतियोगिता का संचालन क्षेत्रीय संयोजिका नीता गादिया, लता आर. गादिया ने किया। शिला सियाल का टेक्नोलॉजी पावर प्वाइंट के माध्यम से सहयोग प्राप्त हुआ। पवन संचेती, बबीता चोपड़ा, सुनीता कोठारी और कल्पना सेठिया का सहयोग रहा। तेरापंथ सभा बेंगलुरु ने विजेता प्रशिक्षिकाओं का सम्मान किया।

## पृष्ठ 1 का शेष

**भोजन का विचारों....**

पूज्यवर ने नशामुक्ति की प्रतिज्ञा करवाई। एनसीसी के अनेक कैडेट्स पूज्यवर की सन्निधि में पहुँचे। राजेश सुराणा, एनसीसी मेजर अरूंधति शाह, मुनि अभिजीत कुमारजी, अणुव्रत समिति सूरत के अध्यक्ष विमल लोढ़ा ने अपनी भावनाएँ व्यक्त की।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने कहा कि वर्तमान में नशे की समस्या बढ़ रही है। नशा छोड़ने के लिए दिनचर्या को व्यवस्थित करना और उसका संकल्प लेना आवश्यक है। अणुव्रत का छोटा नियम ₹मैं नशा नहीं करूंगा₹ जीवन को बेहतर बना सकता है। मुख्य अतिथि भारत सरकार के कानून एवं न्याय तथा संसदीय कार्य राज्यमंत्री तथा जैन विश्व भारती मान्य विश्वविद्यालय के कुलाधिपति अर्जुनराम मेघवाल ने कहा कि अणुविभा के लोग अणुव्रत एक्सप्रेस ट्रेन के डिब्बों में नशामुक्ति और अणुव्रत के संदेश लिखवाने के लिए प्रयास करें। उन्होंने प्राकृत भाषा को क्लासिकल भाषा का दर्जा दिलाने का भी जिक्र किया। एनसीसी में अनुशासन का महत्व है। आचार्यश्री तुलसी ने भी कहा था कि आत्मानुशासन ही अणुव्रत की भाषा है।

अणुविभा सोसाइटी के अध्यक्ष अविनाश नाहर ने भी अपनी भावना व्यक्त की। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया। आचार्य प्रवर की मंगल सन्निधि में चतुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति-सूरत की ओर से चतुर्मास के लिए स्थान प्रदान करने वाले वालों को सम्मानित करने का उपक्रम रहा। इस कार्यक्रम का संचालन चतुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति के महामंत्री नानालाल राठौड़ ने किया।

---

**सम्यक् ज्ञान के साथ...**

व्यक्ति ज्ञान से भावों को समझता है, दर्शन से श्रद्धा करता है, चारित्र से निग्रह करता है, और तप से शुद्धिकरण करता है। उमास्वाति द्वारा रचित ₹तत्त्वार्थसूत्र₹ में जैन सिद्धांतों का सार समाहित है। यह ज्ञान से परिपूर्ण है। त्यागी साधु की बातें लोग श्रद्धा और सम्मान के साथ स्वीकारते हैं। साधु के पांच महाव्रत अमूल्य हीरे हैं। भौतिक हीरों की इनके सामने कोई तुलना नहीं हो सकती। संसार की भौतिक वस्तुओं में फंसे रहने से संसार का चक्र चलता रहता है, जबकि महाव्रत रूपी हीरों से संसार का मार्ग समाप्त होता है, और आत्मा मोक्ष की ओर अग्रसर होती है।

हमारे जीवन में शरीर के बल का महत्व है, तो मनोबल का भी। हमारे तीन योग—मन, वाणी और शरीर—हमारे कर्मचारी हैं। दो हाथ और दो पैर, हमारे नौकर हैं, और हमें इनका सही उपयोग करना चाहिए। व्यक्ति को परावलंबी नहीं, बल्कि स्वावलंबी होना चाहिए।

आज अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का सातवां और अंतिम दिन है। गुरुदेव तुलसी ने 75 वर्ष पहले अणुव्रत आंदोलन शुरू किया था। आज ₹जीवन विज्ञान दिवस₹ है, जो विशेष रूप से शिक्षा जगत के लिए महत्वपूर्ण है। शिक्षा में ज्ञान के साथ संस्कारों का समावेश होना चाहिए। विद्यार्थी नशामुक्त रहें, और उनकी जीवनशैली संस्कारयुक्त हो। विद्यार्थियों में शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक विकास होना चाहिए। आई.क्यू. के साथ ई.क्यू. भी जरूरी है। विद्यार्थियों के विचार और भाव अच्छे हों, सद्विचार और सदाचार जीवन में आ जाएं।

आज के कार्यक्रम में कई विद्यार्थी भी उपस्थित थे। पूज्यवर ने सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति के तीन संकल्पों को विद्यार्थियों को समझाकर उन्हें ग्रहण करवाए। आचार्य प्रवर ने विद्यार्थियों को महाप्राण ध्वनि का अभ्यास भी करवाया।

प्रेक्षाध्यान शिविर से सुनील गुलगुलिया, श्वेता पीपाड़ा और रेणु नाहटा ने अपनी अनुभूतियां साझा की। पूज्यवर ने आशीर्वचन देते हुए कहा कि प्रेक्षाध्यान साधना का एक विशेष अंग है। ध्यान हर क्रिया के साथ जुड़ना चाहिए, ताकि वह भाव क्रिया हो। राग और द्वेष से मुक्त रहकर मन की एकाग्रता साधी जाए। इसे अपने नियमित जीवन क्रम में शामिल करें। धर्मेंद्र बोथरा ने अपनी भावनाएं व्यक्त की। संजय बोथरा ने सप्त दिवसीय अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह की रिपोर्ट प्रस्तुत की। अणुव्रत समिति-सूरत के अध्यक्ष विमल लोढ़ा ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। भगवान महावीर इण्टरनेशनल स्कूल के विद्यार्थियों ने अपनी विभिन्न प्रस्तुतियां दी। भगवान महावीर युनिवर्सिटी के संजय जैन तथा अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के अध्यक्ष अविनाश नाहर ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। मुनि दिनेशकुमारजी ने कार्यक्रम का कुशल संचालन किया।

# बोलती किताब

## सोया मन जग जाए

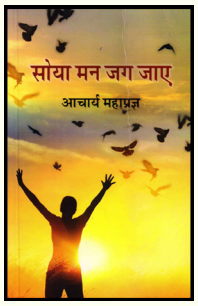


**दुःख का कारण-संवेदना -** इस दुनिया का एक नियम है कि जहां विचार है, मन है, वहां द्वंद्व भी है। कोई भी मानसिक क्रिया द्वंद्वमुक्त नहीं होती, द्वंद्वातीत नहीं होती। जहां मन है, वहां संघर्ष है, टकराव है, दुःख है। आदमी दुःख नहीं चाहता, सुख चाहता है। यह स्वाभाविक प्रकृति है। आदमी ही नहीं, प्रत्येक प्राणी सुख चाहता है, कोई दुःख नहीं चाहता।

**जीवनशैली में परिवर्तन -** हृदय-विशेषज्ञ कहते हैं, जब तक इस जीवनशैली में परिवर्तन नहीं होगी, तब तक हृदय रोग पर नियंत्रण नहीं पाया जा सकेगा। आज यह बीमारी विस्तार पा रही है। जहां विश्राम और सुस्ताने की अनिवार्यता है, वहां भी आदमी रुकता नहीं, दौड़ता ही चला जाता है। जहां आदमी को शिथिलीकरण करना होता है, वहां वह और अधिक तेजी से भागजा है। इसका परिणाम आज हम सबके समक्ष है। सब इसको भोग रहे हैं।

**सफलता की सीमा -** सफलता की भी एक सीमा होती है। उसमें भी तारतम्य होता है। हर आदमी को समानरूप से सफलता नहीं मिलती। एक आदमी अपने काम में एक वर्ष में ही सफल हो जाता है और दूसरा आदमी दस वर्ष तक खपता है, तपता है, फिर भी सफल नहीं होता। एक ही आदमी कभी सफल भी होता है तो कभी विफल भी होता है। जो आदमी इस अहं में रहता है कि मैं जहां भी हाथ डालूंगा, मुझे सोना ही सोना मिलेगा तो वह अहंकार कभी ऐसी घात करता है कि आदमी फिर कभी संभल ही नहीं पाता।

**वृत्तियों के परिष्कार में स्वशक्ति पर निर्भर होना -** अनेक लोग अपनी शक्ति का उपयोग नहीं करते और दूसरों की शक्ति पर अधिक निर्भर रहते हैं। वृत्तियों के परिष्कार में स्वशक्ति पर निर्भर होना आवश्यक है। काम की वृत्ति संकल्प से पैदा होती है। मन में संकल्प उठता है और कामवृत्ति उत्पन्न हो जाती है। जब तक व्यक्ति का दृष्टिकोण आध्यात्मिक नहीं बनेगा, तब तक इस पर नियंत्रण नहीं पाया जा सकेगा। यह आध्यात्मिक नियंत्रण केवल धर्म जगत के लिए ही नहीं, पूरे जगत के लिए आवश्यक है।

**दुख उत्पन्न होने का कारण मिथ्या मान्यताएं -** कुछ व्यक्ति कहते हैं कि ध्यान से कल्पनाजनित दुःख मिट सकता है, पर अभावजनित दुःख कैसे मिटेगा? रोटी का अभाव है। भूख लगी है। ध्यान से भूख नहीं मिटेगी। रोटी खाने से ही भूख मिट सकेगी। हम पुनः इस भ्रांति का निरसन करें कि अभाव दुःख पैदा नहीं करता। दुःख उत्पन्न होता है मिथ्या मान्यताओं से। कल्पना, वियोग या अभाव उसी व्यक्ति पर आक्रमण करते हैं, दुःखी बनाते हैं, जो मिथ्या दृष्टिकोण को पालता है।

**समता का विकास -** ध्यान का अर्थ है उस चेतना का विकास, जिसके द्वारा प्रिय और अप्रिय, अनुकूल और प्रतिकूल स्थितियों को समान भाव से झेल सकें। इस भूमिका का नाम है ध्यान और भूमिका का विकास करना है प्रयोग। शरीर या श्वास को देखना ही ध्यान नहीं है। श्वास को देखना एक आलंबन है, जिससे मन एकाग्र कर सकें। मन को एकाग्र कर उस गांठ को खोलना है, जो बार-बार प्रियता और अप्रियता पैदा करती है। उस गांठ को खोलने के लिये अनेक प्रकार की

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :
**आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती**
+91 87420 04849 / 04949 https://books.jvbharati.org books@jvbharati.org

# भिक्षु दर्शन प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित

**इचलकरंजी।**

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद निर्देशन में 'शासनश्री' साध्वी कंचनप्रभा जी के सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद इचलकरंजी द्वारा भिक्षु दर्शन प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया।

साध्वीश्री ने कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ किया। तेरापंथ युवक परिषद सदस्यों द्वारा विजय गीत का संगान किया। तत्पश्चात स्थानीय तेरापंथी सभा अध्यक्ष अशोक बाफना ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया। तेयुप अध्यक्ष अनिल छाजेड़ ने अपने वक्तव्य के माध्यम से सभी का स्वागत किया एवं आचार्य भिक्षु के जीवन की संक्षिप्त जानकारी दी। साध्वी कंचनप्रभाजी ने अपने उद्बोधन में आचार्य भिक्षु के मौलिक सिद्धांतों बताया। साध्वी चेलनाश्रीजी ने आचार्य भिक्षु के गुणों का गुणगान किया। साध्वी निर्भयप्रभाजी ने गीतिका संगान किया एवं साध्वी उदितप्रभाजी ने आचार्य भिक्षु के घटना प्रसंगों को व्याख्यायित किया। 'शासनश्री' साध्वी मंजुरेखाजी ने 'आचार्य भिक्षु का अनुशासन' विषय पर अपने विचार व्यक्त किए। कार्यशाला में तेरापंथी सभा, तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ युवक परिषद् एवं समाज के श्रावकों की अच्छी उपस्थिति रही। तेयुप मंत्री अंकुश बाफना कार्यक्रम का कुशल संचालन एवं तेयुप साथी भंवर बालर ने आभार प्रकट किया।

# ज्ञान और संयम से कार्मण शरीर को ध्वस्त करने का करें प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

सूरत।
04 अक्टूबर, 2024

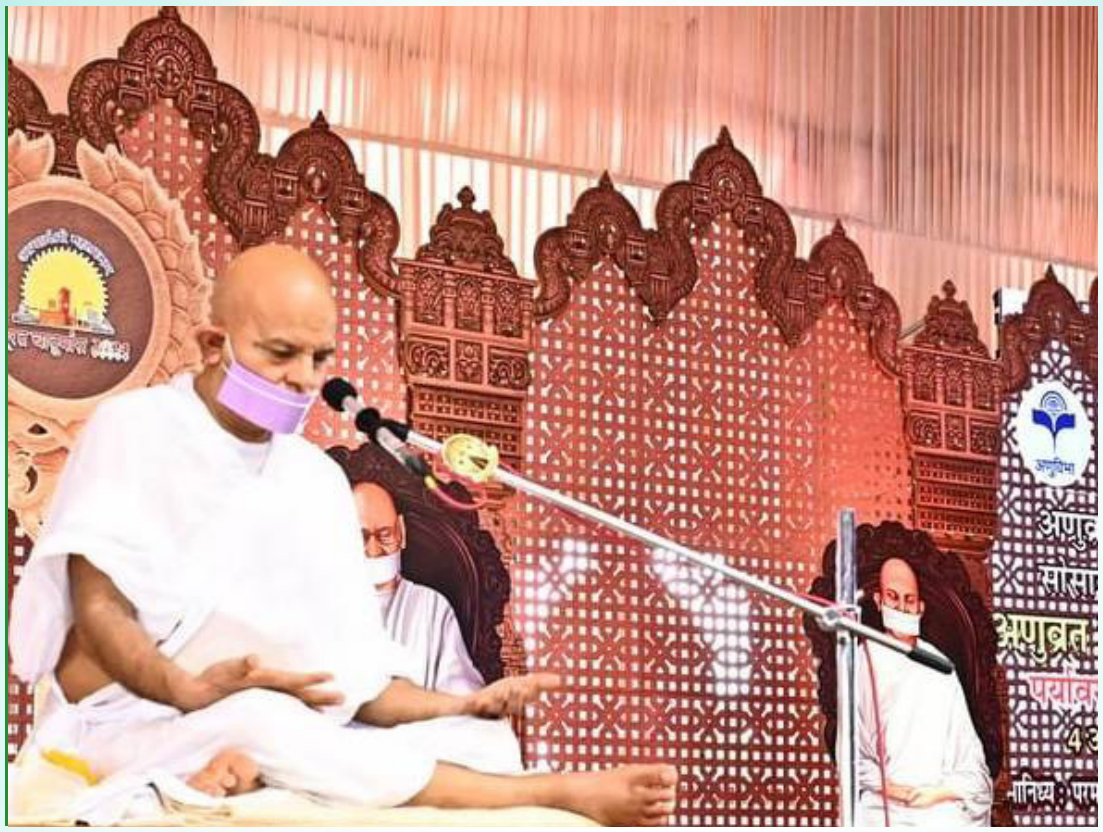

शक्ति और शांति से संपन्न आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आध्यात्मिक अनुष्ठान की अमृत वर्षा के पश्चात आगम वाणी की अमृत वर्षा करते हुए फरमाया कि आयारो आगम में कहा गया है—हमारे जीवन में आत्मा और शरीर दो प्रमुख तत्व हैं। आत्मा चैतन्यमय है, जबकि शरीर पुद्गल, यानी अजीव है। चेतन और अचेतन का संयोग ही जीवन है।

जब आत्मा और शरीर अलग हो जाते हैं, तो मृत्यु होती है। शरीर वहीं पड़ा रहता है, और आत्मा कहीं और चली जाती है। मोक्ष क्या है? आत्मा का हमेशा के लिए शरीर से मुक्त हो जाना और फिर कभी शरीर धारण न करना। इस रूप में आत्मा जब शरीर से अलग हो जाती है, तो उसे मोक्ष कहा जाता है। आत्मा का अस्थायी वियोग मृत्यु है, जबकि आत्मा और शरीर का अंतिम वियोग मोक्ष कहलाता है।

आयारो में कहा गया है—कर्म शरीर को प्रकम्पित करो। जैन दर्शन में पाँच प्रकार के शरीर बतलाए गए हैं :- औदारिक शरीर, जो स्थूल शरीर है, देवों और नैरयकों में वैक्रिय शरीर होता है। इसके अलावा, तेजस और कार्मण शरीर भी होते हैं। तेजस शरीर विद्युत जैसा सूक्ष्म होता है, जबकि उससे भी सूक्ष्म कार्मण शरीर होता है, जिसे कर्म शरीर भी कहा जा सकता है। मुनि इस कार्मण शरीर को ध्वस्त करने का प्रयास करते हैं। कार्मण शरीर कारण शरीर है, जो जन्म और सुख-दुःख का कारण है। ज्ञान और संयम के माध्यम से मुनि इस कार्मण शरीर को खत्म कर सकते हैं।

ज्ञान और क्रिया के माध्यम से मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है। तपस्या भी कार्मण शरीर को प्रकम्पित करने का एक उपाय है। यद्यपि हम कर्म शरीर को देख नहीं सकते, लेकिन स्थूल शरीर से की गई साधना का प्रभाव कार्मण शरीर पर पड़ता है। तप का उद्देश्य कर्मों का नाश करना है। केवल तपस्या से नहीं, बल्कि संवर से मोक्ष प्राप्ति संभव है। संवर के बढ़ने से गुणस्थानों में आरोहण होता है।

पूज्य सन्निधि में अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का चौथा दिवस 'पर्यावरण शुद्धि दिवस' के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर उपस्थित डॉ. दयांजलि ठक्कर ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि मेरा सौभाग्य है कि मुझे आचार्यश्री महाश्रमणजी के दर्शन का सौभाग्य मिल रहा है। हम सभी को पर्यावरण को प्रदूषित नहीं, उसके उसके शुद्धिकरण का प्रयास करना चाहिए। पर्यावरण विशेषज्ञ डॉ. सर्वेश गौतम ने भी इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त किए।

पूज्यवर ने फरमाया कि हमारे जीवन में अहिंसा और संयम यदि प्रमुखता से रहें, तो कई समस्याओं का समाधान अपने आप हो सकता है। अहिंसा और संयम हमारे व्यवहार का हिस्सा बनने चाहिए। जैन दर्शन में वनस्पति और मनुष्य की तुलना की गई है—एक पेड़ को काटना मानो एक बच्चे को काटने जैसा हो सकता है। वनस्पति भी सजीव है। हमें बिजली, पानी और वनस्पति का संयम रखना चाहिए। पर्यावरण के लिए हानिकारक चीजों से बचने का प्रयास करना चाहिए।

तेरापंथ कन्या मंडल, सूरत ने 'चौबीसी' गीत प्रस्तुत किया। तेरापंथी सभा-चेन्नई के अध्यक्ष अशोक खतंग ने अपने विचार व्यक्त किए। चेन्नई की ज्ञानशालाओं के ज्ञानार्थियों व प्रशिक्षिकाओं ने से गीत की प्रस्तुति दी। यशवंतपुर बैंगलोर ज्ञानशाला के ज्ञानार्थी हर्षिल बरड़िया ने गीत की प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

# कार्य, व्यवहार, भाषा और विचार में रहे अहिंसा का प्रभाव : आचार्यश्री महाश्रमण

सूरत।
02 अक्टूबर, 2024

अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस, महात्मा गांधी और लाल बहादुर शास्त्री का जन्म दिवस, साथ ही अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का दूसरा दिन अहिंसा दिवस के रूप में मनाया गया।

अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमणजी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए कहा कि आगम में कहा गया है- अनासक्त साधक शब्द और स्पर्श को सहन करता है। सहिष्णुता एक गुण और साधना होती है। जब मन या शरीर की विपरीत स्थिति आती है, तब उसे समभाव से सहन करना एक उत्कृष्ट साधना है।

कई बार ऐसे शब्द सुनने को मिलते हैं जो कटु होते हैं या अपमानजनक होते हैं। साधुओं को भी अपमानजनक शब्द सुनने पड़ सकते हैं, लेकिन उनका धर्म है कि वे उसे सहन करें।

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के अंतर्गत अहिंसा दिवस के उपलक्ष में पूज्य प्रवर ने फरमाया कि हमारे कार्यों, व्यवहार, भाषा और विचारों में अहिंसा का प्रभाव बना रहे। यह सप्ताह अणुव्रत के प्रचार-प्रसार के लिए भी महत्वपूर्ण है। अहिंसा को भगवती, माता और जीवनदायिनी के रूप में प्रस्तुत किया गया है। महात्मा गांधी ने जब विदेश यात्रा की थी, तब उन्होंने तीन संकल्प लिए थे, जो अणुव्रत के नियमों से मिलते-जुलते थे। शौर्य, वीर्य और बलवती अहिंसा को कामना योग्य बताया गया है।

पूज्यवर द्वारा प्रेक्षाध्यान का प्रयोग करवाने के पश्चात 'शासन गौरव' साध्वी कल्पलताजी द्वारा संपादित एवं जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'शासनमाता सादर स्मरण—भाग 2' पूज्यवर को लोकार्पित की गई।

मुनि उदितकुमारजी ने नवरात्र में होने वाले आयंबिल महानुष्ठान की जानकारी

प्रदान की। अहिंसा दिवस पर छोटे-छोटे बच्चों ने भी प्रस्तुति दी। मुंबई से स्थानकवासी संघ के ट्रस्टी मुकेश भाई ने भी अपनी भावनाएं व्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
14 अक्टूबर-20 अक्टूबर, 2024

# अहिंसा, सत्य और संयम से जीवन में होता है मंगल : आचार्यश्री महाश्रमण

## अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्वाधान में अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का हुआ शुभारंभ

**सूरत।**
**01 अक्टूबर, 2024**

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी की पावन सन्निधि में 01 अक्टूबर से 07 अक्टूबर तक अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्वाधान में अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का शुभारंभ हुआ। आज के कार्यक्रम में हरिधाम सोखड़ा योगी डिवाइन सोसाइटी के अध्यक्ष स्वामी गुरुहरि प्रेमस्वरूप जी और स्वामी त्यागवल्लभ जी की सम्माननीय उपस्थिति रही। साम्प्रदायिक सौहार्द दिवस कार्यक्रम की शुरुआत अणुव्रत गीत से की गई।

शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी ने कहा कि शास्त्रों में कई कल्याणकारी वाणियां हैं, जिन्हें जीवन में अपनाने से आत्मा का उद्धार हो सकता है। सबसे बड़ा मंगल धर्म है। तेरापंथ धर्म संघ के 256 वर्षों के इतिहास में दस आचार्य हुए हैं, जिनमें आचार्य श्री तुलसी ने धर्म को व्यापक रूप में प्रस्तुत किया। जैन हो या अजैन, सभी को अच्छी बातों और नियमों को स्वीकार करना चाहिए। कुछ नियम सभी सम्प्रदायों में मिल सकते हैं। जैसे गुड़ खाने से मुंह मीठा होता है, वैसे ही अहिंसा, सत्य और संयम के पालन से जीवन में मंगल होता है।

उपासना की पद्धतियां अलग हो सकती हैं, परंतु अहिंसा, सत्य और संयम में समानता हो सकती है। धर्म का पालन करने वाला व्यक्ति चाहे जैन हो या अजैन, उसका कल्याण सुनिश्चित होता है।

आज अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का प्रारंभ हो रहा है, जिसमें अनेक अजैन भी जुड़े हुए हैं। अणुव्रत को बाजार, चौराहों, विद्यालयों और जेल में बंद कैदियों के बीच भी ले जाया जाए, ताकि उनका जीवन भी अच्छा बन सके। ये छोटे-छोटे नियम जैसे मैं नशा नहीं करूंगा, मैं निरपराध की हत्या नहीं करूंगा, ईमानदार रहूंगा, पर्यावरण की रक्षा करूंगा आदि-आदि नियम आदमी के जीवन में आते हैं तो जीवन अच्छा बन सकता है। अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का प्रथम दिन सांप्रदायिक सौहार्द दिवस है तो आज दो संप्रदायों का मिलन हो रहा है।

स्वामी त्यागवल्लभजी ने स्वामी प्रेमस्वरूपजी के संदेश का वाचन करते हुए कहा कि आचार्य श्री महाश्रमणजी जैसे संतों का दर्शन भाग्य से मिलता है। इनके प्रवास से हर कार्य सिद्ध हो जाते हैं। स्वामीजी ने आचार्य प्रवर से राजकोट स्थित उनके परिसर में पधारने का निवेदन भी किया।

कार्यक्रम में अणुव्रत समिति सूरत के अध्यक्ष विमल लोढ़ा, अणुविभा के उपाध्यक्ष राजेश सुराणा और विनोद बांठिया ने भी अपनी अभिव्यक्ति दी। चतुर्दशी के संदर्भ में आचार्यश्री ने हाजरी का वाचन किया। तदुपरान्त समस्त चारित्रात्माओं ने अपने स्थान पर खड़े होकर लेखपत्र का उच्चारण किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

## आचार्यश्री महाश्रमण : चित्रमय झलकियां

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित।